A Daily News Magazine
भोपाल
गुरुवार, 20 फरवरी, 2025

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष -22 अंक-171 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

डोनाल्ड ट्रंप के 'टैरिफ वार' का दुनिया पर क्या असर होगा?

सत्य ब्यूरो

डोनाल्ड ट्रंप के टैरिफ़ वार से अमेरिकी अर्थव्यवस्था मज़बूत होगी या इसकी हालत बिगड़ेगी? कम से कम ट्रंप अमेरिकियों को जो सपने दिखा रहे हैं वह तो अमेरिका को फिर से महान बनाने का है, लेकिन अमेरिका को इसकी क्या क़ीमत चुकानी पड़ेगी, क्या इसका अंदेशा उनको है? यदि ऐसा होता तो टैरिफ़ वार पर लगातार वह क्या इतना मुखर होते?

ट्रंप ने मंगलवार को फिर से कहा है, 'व्यापार के मामले में मैंने निष्पक्षता के उद्देश्य से यह निर्णय लिया है कि मैं जवाबी टैरिफ लगाऊंगा, जिसका मतलब है कि जो भी देश संयुक्त राज्य अमेरिका से शुल्क लेंगे, हम उनसे शुल्क लेंगे - न अधिक, न कम!' उन्होंने कहा है, 'कई वर्षों से, अमेरिका के साथ अन्य देशों द्वारा अनुचित व्यवहार किया गया है, चाहे वे मित्र हों या शत्रु।' ...अब समय आ गया है कि ये देश इसे याद रखें, और हमारे साथ निष्पक्ष व्यवहार करें।

राष्ट्रपति पद संभालने के तुरंत बाद ट्रंप ने जब से कनाडा, मैक्सिको और चीन से आने वाले सामानों पर हैवी टैरिफ़ लगाने वाले एग्ज़ीक्यूटिव ऑर्डर पर दस्तख़त किया है तब से एक बड़ा आर्थिक संघर्ष भड़कने की आशंका जताई जा रही है। ट्रंप के इस फ़ैसले के बाद उसके पड़ोसी देश कनाडा और मैक्सिको ने जवाबी कार्रवाई की और अमेरिका पर जवाबी शुल्क लगा दिया। चीन ने भी ऐसा ही किया है। यूरोपीय संघ पर भी टैरिफ़ लगाने की बात चल रही है। भारत के मामले में ट्रंप ने तो साफ़-साफ़ दो टूक कह ही दिया है कि टैरिफ़ लगेगा।

तो क्या अमेरिका के टैरिफ़ लगाने से दुनिया के देशों को बड़ा नुक़सान होगा और अमेरिका बहुत बड़े फ़ायदे में होगा? इसका असर दुनिया सहित तमाम देशों पर क्या होगा, इस पर चर्चा बाद में पहले यह जान लें कि ट्रंप ने किस तरह के टैरिफ़ की घोषणा की है और इसके जवाब में अन्य देशों ने क्या किया है।

ट्रंप की सबसे बड़ी घोषणा तो चीन, मैक्सिको और कनाडा पर टैरिफ़ लगाने की थी। चीन, मैक्सिको और कनाडा ने मिलकर 2024 में 40 प्रतिशत से अधिक हिस्सा अमेरिका में निर्यात किया।

चीन: चीन से अमेरिका में आयात किए जाने वाले सभी सामानों पर 10 प्रतिशत शुल्क 4 फरवरी को लागू हुआ। बीजिंग ने अपने टैरिफ के साथ जवाबी कार्रवाई की, जो 10 फरवरी को प्रभावी हुआ। इसमें अमेरिकी कोयला और तरल प्राकृतिक गैस उत्पादों पर 15 प्रतिशत टैरिफ और कच्चे तेल, कृषि मशीनरी और बड़े इंजन वाली कारों पर 10 प्रतिशत टैरिफ शामिल हैं।

कनाडा: कनाडा से आने वाले सभी सामानों पर 25 प्रतिशत का प्रस्तावित टैरिफ भी 4 फरवरी से शुरू होने वाला था। हालाँकि, इसमें 30 दिनों की देरी हुई। इस वजह से कनाडा ने 155 बिलियन कनाडाई डॉलर के अमेरिकी आयात पर 25 प्रतिशत के अपने जवाबी टैरिफ को भी रोक दिया।

इससे पहले ट्रंप द्वारा टैरिफ़ लगाए जाने की घोषणा करने के बाद कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने कहा था कि उनकी सरकार जवाब में 155 बिलियन कनाडाई डॉलर मूल्य के अमेरिकी सामानों पर 25 प्रतिशत टैरिफ लगाएगी।

मैक्सिको : मैक्सिको के खिलाफ़ प्रस्तावित 25 प्रतिशत टैरिफ़ को भी एक महीने के लिए टाल दिया गया है, क्योंकि मैक्सिको ने अमेरिकी वस्तुओं के खिलाफ़ नए उपाय किए हैं। मैक्सिकन राष्ट्रपति क्लाउडिया शिनबाम ने 'ड्रग्स, विशेष रूप से फेंटेनल की तस्करी को रोकने' के लिए यूएस-मैक्सिकन सीमा पर नेशनल गार्ड के 10,000 सदस्यों को भेजने पर सहमति व्यक्त की। शीनबाम ने कहा कि अमेरिका ने मैक्सिको में उच्च क्षमता वाले अमेरिकी हथियारों की तस्करी को रोकने के लिए उपाय बढ़ाने पर सहमति जताई है।

पहले मैक्सिकन राष्ट्रपति क्लाउडिया शिनबाम ने घोषणा की थी कि मैक्सिको अपने हितों की रक्षा के लिए जवाबी शुल्क लगाएगा और अन्य उपाय करेगा। उन्होंने ट्रंप के इस आरोप को भी खारिज कर दिया था कि मैक्सिकन सरकार के आपराधिक संगठनों से संबंध हैं।

भारत: इससे पहले ट्रंप ने वाशिंगटन में पीएम मोदी से मुलाक़ात से पहले टैरिफ़ लगाने की घोषणा की थी और कहा था कि भारत दुनिया भर में सबसे ज़्यादा टैरिफ़ लगाने वाला देश है। हालांकि, ट्रंप से मुलाक़ात से पहले ही टैरिफ़ भारत ने 13 से घटाकर 11 फ़ीसदी कर दिया था। लग्ज़री कार जैसे सामानों पर सबसे ज़्यादा 150 फ़ीसदी लगने वाले टैरिफ़ को भी घटाकर 70 फ़ीसदी कर दिया गया। वैसे, बड़ी अर्थव्यवस्थाओं वाले देश औसत रूप से 3-4 फ़ीसदी टैरिफ़ लगाते रहे हैं।

यूरोपीय संघ को भी ट्रंप ने यही चेतावनी दी है। जवाब में यूरोपीय संघ ने भी टैरिफ़ का जवाब देने की घोषणा की है। वैसे, ट्रंप द्वारा हस्ताक्षर किए गए एग्ज़ीक्यूटिव ऑर्डर में यह भी शामिल है कि अगर देश अमेरिका के खिलाफ जवाबी कार्रवाई करते हैं तो दरों को बढ़ाया जा सकता है। मतलब साफ़ है कि 'टैरिफ़ वार' के बढ़ने की ही आशंका है। टैरिफ़ वार बढ़ने का असर होगा कि लोगों को सामान महंगे मिलेंगे। कई देशों में काफ़ी ज़्यादा महंगाई पहले से ही है और ऐसे में सामानों की क़ीमतें बढ़ने पर संकट और बढ़ेगा ही। यह उन देशों की अर्थव्यवस्थाओं के लिए भी घातक होगा।

साफ़ है कि ट्रंप ने ऐसे मुद्दे को छेड़ दिया है जो अमेरिका के लिए भी कम महंगा साबित नहीं होगा। ट्रंप के इस निर्णय से मैक्सिको, चीन और कनाडा के साथ आर्थिक गतिरोध का ख़तरा बढ़ गया है। बता दें कि ये देश अमेरिका के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदार हैं।

टैरिफ से काफी बड़ी आर्थिक बाधा आ सकती है। विश्लेषकों ने चेतावनी दी है कि इससे महंगाई बढ़ सकती है। बीबीसी की रिपोर्ट के अनुसार अर्थशास्त्रियों ने चेताया है कि आयातित सामान बेचने वाली कंपनियां शुल्क की लागत को कवर करने के लिए अमेरिकी उपभोक्ताओं के लिए कीमतें बढ़ा सकती हैं।

'द इंडियन एक्सप्रेस' की रिपोर्ट के अनुसार येल विश्वविद्यालय के बजट लैब ने अनुमान लगाया है कि नए आयात करों के कारण औसत अमेरिकी परिवार को वार्षिक आय में 1,170 डॉलर का नुकसान होगा।

तो सवाल है कि ट्रंप आखिर इतना बड़ा जोखिम क्यों ले रहे हैं? ट्रंप के टैरिफ एक व्यापक राजनीतिक रणनीति का हिस्सा हैं जिसका उद्देश्य अमेरिकी उद्योगों की रक्षा करने और अवैध इमिग्रेशन व मादक पदार्थों की तस्करी जैसे मुद्दों से निपटने के अपने अभियान के वादों को पूरा करना है। राष्ट्रपति लंबे समय से यह तर्क देते रहे हैं कि अमेरिका की आर्थिक शक्ति को बहाल करने के लिए टैरिफ ज़रूरी हैं। अब ट्रंप को महंगाई को काबू में करने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

रेखा गुप्ता होंगी दिल्ली की नई मुख्यमंत्री

प्रवेश वर्मा डिप्टी सीएम होंगे, शपथ आज

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता होंगी। आरएसएस ने उनके नाम का प्रस्ताव रखा था, जिसे भाजपा ने मान लिया है। प्रवेश वर्मा डिप्टी

सीएम होंगे। पार्टी के दोनों पर्यवेक्षक रविशंकर प्रसाद और ओम प्रकाश धनखड़ पार्टी दफ्तर में विधायकों से एक-एक करके बात की, फिर उनके नाम का ऐलान किया। विजेंद्र गुप्ता विधानसभा स्पीकर होंगे। विधानसभा चुनाव रिजल्ट के 11 दिन बाद बुधवार शाम 7 बजे भाजपा विधायक दल की बैठक में मुख्यमंत्री के नाम का ऐलान हो गया है। मुख्यमंत्री की शपथ आज गुरुवार (20 फरवरी) को रामलीला मैदान में दोपहर 12.35 बजे होगी। दिल्ली के मुख्य सचिव की तरफ से भेजे गए निमंत्रण में मुख्यमंत्री के साथ मंत्रियों की शपथ का भी जिक्र है।

कई राज्यों के मुख्यमंत्री हो सकते हैं शामिल

कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अलावा भाजपा-एनडीए शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों के रहने की भी उम्मीद जताई जा रही है। ऐसे में दिल्ली पुलिस ने सुरक्षा के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया है। चूंकि कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मौजूद रहेंगे, इसलिए उनकी सुरक्षा में एसपीजी का घेरा मौजूद रहेगा।

अब तीन राज्यों के चुनाव पर प्रधानमंत्री मोदी की नजर

मैराथन दौरे का पहला पड़ाव बिहार, 24 फ़रवरी से अभियान

पटना (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव में करीब तीन दशक बाद जीत हासिल करने वाली भाजपा ने जश्न मना लिया है और अब फिर से चुनावी अभियान में जुट गई है। खासतौर पर पार्टी के शीर्ष नेता पीएम नरेंद्र मोदी किसी भी तरह से रिलैक्स के मूड में नहीं हैं। अब वह बिहार, असम और तमिलनाडु जैसे राज्यों पर फोकस कर रहे हैं। बिहार में तो इसी साल अक्टूबर तक विधानसभा चुनाव होने हैं। इसके अलावा असम और तमिलनाडु में अगले साल इलेक्शन होगा। इन राज्यों को

लेकर पहले से ही भाजपा तैयारी में है और 24 फरवरी को बिहार के भागलपुर से पीएम नरेंद्र मोदी चुनाव अभियान की शुरुआत करेंगे। भागलपुर में रैली को लेकर तैयारियां जोरों पर हैं। इसके अलावा असम भी वह 24 फरवरी को ही जाएंगे। असम और तमिलनाडु में चुनाव लगभग एक साल दूर है, लेकिन पीएम मोदी कोई कसर छोड़ना नहीं चाहते। इसी के चलते वह असम जाएंगे तो फिर वहीं 28 तारीख को तमिलनाडु के रामेश्वरम भी पहुंच रहे हैं।

सुप्रभात

भीड़ सिर्फ भीड़ है
भीड़ का न संविधान है न विधान
भीड़ की न कोई भाषा है न परिभाषा
भीड़ एक हास और परिहास है
भीड़ के पास न सोच न विवेक
भीड़ सिर्फ चिल्लाती और शोर मचाती है
भीड़ सिर्फ रुलाती है
भीड़ सिर्फ तालियां बजाती है
भीड़ सिर्फ अपनी बात करती है
भीड़ सिर्फ अपना सोचती है
भीड़ जाति की है
भीड़ धर्म की है
भीड़ उन्माद की है
भीड़ वाद और विवाद है
भीड़ न कोई संवाद है
भीड़ सिर्फ दौड़ती और रौंदती है
भीड़ एक पीड़ा और क्रूरता है
भीड़ का चेहरा वीभत्स है
भीड़ भेड़ और भेड़िया है
भीड़ जीवन का शोक गीत है।

- प्रभुनाथ शुक्ल

मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में हुई नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण की बैठक

सिंचाई रकबे को एक करोड़ हेक्टेयर तक ले जाने का लक्ष्य

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में सिंचाई के रकबे को वर्ष 2028-29 तक एक करोड़ हेक्टेयर तक करने का लक्ष्य है। अतः सभी परियोजनाओं में निर्माण गतिविधियों का संचालन समय-सीमा में पूर्ण किया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सिंहस्थ- 2028 में श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या ओंकारेश्वर दर्शन के लिए भी जाएगी। अतः ओंकारेश्वर में नर्मदा नदी के दोनों तटों पर घाट निर्मित किए जाएं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यह निर्देश नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण की बैठक में दिए। मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में आयोजित बैठक में उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा, मुख्य सचिव अनुराग जैन सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

रबीन्द्रनाथ टैगोर विवि में 'कथा समय' आज

भोपाल। कहानी और कविता पर केंद्रित भव्य समागम 19 फरवरी से प्रारंभ हो चुका है। कला, साहित्य एवं संस्कृति के लिये समर्पित वनमाली सृजनपीठ द्वारा वनमालीजी के शिष्य एवं प्रखर कवि, आलोचक, अनुवादक, पत्रकार विष्णु खरे की स्मृति में राष्ट्रीय कविता सम्मानों की घोषणा की गई है। तीन दिवसीय वनमाली कथा समय एवं राष्ट्रीय विष्णु खरे कविता सम्मान समारोह रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय एवं स्कोप ग्लोबल स्किल्स यूनिवर्सिटी में हो रहा है। इसमें चार अलग-अलग श्रेणियों में रचनाकारों को सम्मानित किया जायेगा। विष्णु खरे आलोचना सम्मान से वरिष्ठ। आलोचक, कवि, अनुवादक नंदकिशोर आचार्य (बीकानेर), विष्णु खरे अनुवाद सम्मान से वरिष्ठ अनुवादक ए. अरविंदाक्षन (केरल), विष्णु खरे कविता सम्मान से सुप्रसिद्ध साहित्यकार, कवि, अनुवादक एवं आलोचक लीलाधर मंडलोई (नई दिल्ली) तथा विष्णु खरे युवा कविता सम्मान से युवा कवियत्री सुश्री पार्वती तिर्की (झारखंड) को सम्मानित किया जायेगा।

वनमाली कथा समय एवं विष्णु खरे कविता सम्मान समारोह भोपाल में आयोजित हो रहा है। 19 एवं 20 फरवरी को रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में 'कथा समय' का एवं 21 फरवरी को विष्णु खरे कविता सम्मान का आयोजन स्कोप ग्लोबल स्किल्स विश्व विद्यालय भोपाल के वनमाली सभागार में आयोजित किया जायेगा। इसमें पहले दिन 'समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य और वनमाली कथा', 'परिचर्चाः मलयालम में हिंदी के रचनाकार' विषयों पर सत्रों का आयोजन होगा। इसके अलावा संतोष चौबे की कहानी 'लेखक बनाने वाले' की नाट्य प्रस्तुति टैगोर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के छात्रों द्वारा दी जाएगी। इस दौरान वनमाली कथा प्रतियोगिता विशेषांक लोकार्पण, वनमाली कथा प्रतियोगिता के विजेता रचनाकारों का सम्मान, लता अग्रवाल की पुस्तक 'वनमाली जी की कहानियों से गुजरते हुए' का लोकार्पण, 'वनमाली - एक कृति व्यक्तित्व' तथा 'हिंदी के अपराजेय कवि विष्णु खरे' पुस्तक का लोकार्पण होगा।

समारोह के दूसरे दिन के कार्यक्रमों में कहानी पाठ एवं संगोष्ठी का आयोजन होगा। संगोष्ठी का विषय 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता के परिपार्श्व में कहानी का भविष्य' है। वहीं तीसरे दिन 'राष्ट्रीय विष्णु खरे सम्मान समारोह का आयोजन होगा' जिसमें चयनित रचनाकारों का सम्मान होगा। इस समारोह का संचालन टैगोर विश्व कला और संस्कृति केन्द्र के निदेशक विनय उपाध्याय करेंगे। इस अवसर पर 'विश्व रंग अंतरराष्ट्रीय हिंदी ओलम्पियाडः 2025' का पोस्टर रिलीज किया जाएगा। शाम के सत्र में '... और नाज मैं किस पर करूं' की नाट्य प्रस्तुति होगी जो कि विष्णु खरे की कविताओं पर आधारित है।

सम्मान समारोह में पुरस्कृत रचनाकारों के साथ देश के ख्यात साहित्यकार ममता कालिया (नई दिल्ली), अरुण कमल (पटना), अखिलेश (लखनऊ), जितेन्द्र श्रीवास्तव (दिल्ली), ओमा शर्मा (मुंबई), मनीषा कुलश्रेष्ठ (जयपुर), महेश दर्पण, प्रकाश मनु, देवी प्रसाद मिश्र (नई दिल्ली), नीलेश रघुवंशी, मुकेश वर्मा, संतोष चौबे (भोपाल), महेश वर्मा, रामकुमार तिवारी (छत्तीसगढ़) तथा 100 से अधिक वनमाली सृजन केन्द्रों के संयोजक भाग लेंगे। भोपाल तथा मध्यप्रदेश के भी अनेक साहित्यकार विभिन्न सत्रों में उपस्थित रहेंगे।

- विस्तृत पेज 8 पर देखे

वनमाली कथा समय और विष्णु खरे कविता सम्मान समारोह में सभी कृति व्यक्तित्वों और साहित्य अनुरागियों का वनमाली सृजन पीठ, भोपाल की ओर से सादर अभिनंदन

कथादेश

भारत के हिन्दी कथाकारों पर केन्द्रित कथाकोश

'कथादेश' के सम्पूर्ण सेट का मूल्य 17,820 रु. है। जिस पर निर्धारित छूट देय होगी।

कथादेश के खंड निम्न समूहों के अनुसार भी क्रय किये जा सकते हैं :

धरोहर
(धरोहर, प्रेमचंदोत्तर कहानी-1 व 2)
तीनों खंड एक साथ 2970 रु. (छूट के साथ 2200 रु.)

नई व साठोत्तरी कहानी
(नई कहानी-1 व 2 तथा साठोत्तरी कहानी-1 व 2)
चारों खंड एक साथ 3960 रु. (छूट के साथ 3000 रु.)

समकालीन कहानी
(समकालीन कहानी-1, 2, 3, 4, 5, 6 व 7)
सातों खंड एक साथ 6930 रु. (छूट के साथ 5200 रु.)

युवा कहानी
(युवा कहानी-1, 2, 3 व 4)
चारों खंड एक साथ 3960 रु. (छूट के साथ 3000 रु.)

डाक से मँगाने पर डाक खर्च अलग से देय होगा।

'कथादेश' प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें

आईसेक्ट पब्लिकेशन
ई-7/22, एस.बी.आई., अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016
फोन : 0755-4851056, 8818883165
E-mail : aisectpublications@aisect.org, mahip@aisect.org

आईसेक्ट लिमिटेड
स्कोप कैम्पस, एनएच-12, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462047
फोन : 0755-2432801, 2432830

प्रधान संपादक संतोष चौबे
संपादक मुकेश वर्मा

आईसेक्ट पब्लिकेशन

'कथादेश'
अमेजन व आईसेक्ट ऑनलाइन पोर्टल पर भी उपलब्ध है

भोपाल का तापमान

अधिकतम 22 °c | न्यूनतम 16°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ गुरुवार,20 फरवरी 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

हरियाणा में बनेगा सबसे बड़ा जंगल सफारी पार्क

गुरुग्राम और नूंह जिले में हो सकता है विकसित, तैयारी पूरी

चंडीगढ़ (एजेंसी)। घूमने-फिरने के साथ-साथ एडवेंचर का शौक रखने वाले पर्यटकों के लिए खुशखबरी आई है। जानकारी के अनुसार, हरियाणा अरावली रेंज में दुनिया का सबसे बड़ा जंगल सफारी पार्क को विकसित किया जाएगा, जिसकी घोषणा राज्य सरकार ने दी है। 10 हजार एकड़ को कवर करने वाली इस योजना का उद्देश्य विश्व स्तर पर सबसे बड़ी परियोजना बनाने का है। अभी तक सबसे बड़ा क्यूरेटेड सफारी पार्क शारजाह में स्थित है, जो करीबन 2 हजार एकड़ में फैला हुआ है। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि अरावली पार्क इससे पांच गुना बड़ा होने वाला है। पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए यहां कई आकर्षण भी लगाए जाएंगे। मिडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, ये जंगल सफारी पार्क हरियाणा के गुरुग्राम और नूंह जिले में विकसित किया जा सकता है। अरावली पर्वत श्रृंखला में मौजूद ये सफारी पार्क ना केवल अपने बड़े क्षेत्र के लिए खास होगा बल्कि अपनी अद्वितीय डिजाइन के लिए भी विशेष रहने वाला है। हरियाणा सरकार स्थानीय लोगों को भी इस प्रोजेक्ट से जोड़ने की प्लानिंग कर रही है। होम-स्टे पुलिस और स्थानीय प्रशासन गांव के समुदायों को पर्यटन और संरक्षण के महत्व को लेकर जागरुक करेगा। इससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था में भी सहायता मिलेगी। अरावली क्षेत्र में समृद्ध है जैव विविधता अरावली पर्वत श्रृंखला पहले से ही जैव विविधता से समृद्ध है। एक हाल के सर्वेक्षण के मुताबिक, इस जगह पर 180 प्रजातियों के पक्षी, 15 प्रजातियों के स्थलीय जीव, 29 प्रजातियों के पानी वाले जीव और सरीसृप, 57 प्रजातियों की तितलियां पाई जाती हैं।

डॉ. जवाहर कर्नावट इंडोनेशिया सम्मेलन में आमंत्रित

भोपाल। प्रदेश के प्रख्यात लेखक -वक्ता एवं भारत सरकार द्वारा विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित डॉ. जवाहर कर्नावट को आईजीबी सुग्रीव स्टेट हिंदी यूनिवर्सिटी बाली एवं यायासन धर्म स्थानम संस्था इंडोनेशिया द्वारा आयोजित

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में विशेष वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया है। 24 व 25 फरवरी को आयोजित इस सम्मेलन में डॉ. कर्नावट 'रामायण के माध्यम से हिंदी और भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रसार' विषय पर व्याख्यान देंगे। डॉ. कर्नावट उदयनान विश्वविद्यालय ,बाली में भी छात्रों को संबोधित करेंगे। उल्लेखनीय है कि डॉ. कर्नावट द्वारा 27 देशों की हिंदी पत्रकारिता पर लिखित पुस्तक वैश्विक स्तर पर अत्यंत लोकप्रिय हुई और इसे लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में भी स्थान मिला है।

ज्ञानेश कुमार ने संभाला चीफ इलेक्शन कमिश्नर का पद

- जनवरी 2029 तक रहेगा कार्यकाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। 1988 बैच के आईएएस अधिकारी ज्ञानेश कुमार ने बुधवार को देश के 26वें चीफ इलेक्शन कमिश्नर (सीईसी) का पद संभाला। नए कानून के तहत नियुक्त होने वाले वे पहले सीईसी हैं। उनका कार्यकाल 26

जनवरी 2029 तक रहेगा। इससे पहले सीईसी पद पर रहे राजीव कुमार 18 फरवरी को रिटायर हुए थे। ज्ञानेश कुमार के 4 साल के कार्यकाल के दौरान 20 राज्य और 1 एक केंद्रशासित प्रदेश (पुडुचेरी) में चुनाव होंगे। शुरुआत बिहार से होगी और अंतिम चुनाव मिजोरम में होगा। ज्ञानेश कुमार के अलावा विवेक जोशी को चुनाव आयुक्त नियुक्त किया गया है। वे हरियाणा के मुख्य सचिव और 1989 बैच के अधिकारी हैं। वहीं, चुनाव सुखबीर सिंह संधू बने रहेंगे।

महाकुंभ के कारण चार राज्यों की 46 ट्रेनें निरस्त

मेला खत्म होने में सात दिन बचे

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रयागराज महाकुंभ खत्म होने में अब सिर्फ 7 दिन बचे हैं। 38 दिनों में कुल 55.56 करोड़ श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई है। रेलवे ने महाकुंभ के चलते विभिन्न राज्यों से प्रयागराज जाने वाली 46 ट्रेनें कैंसिल कर दी हैं। राजस्थान से 10, हरियाणा से 4, मप्र

होकर जाने वाली 16 और बिहार से जाने वाली 16 ट्रेनें कैंसिल कर दी हैं। इसके अलावा कई ट्रेनों के रूट भी बदले गए हैं। जयपुर, जोधपुर, अजमेर और बीकानेर से चलने वाली 10 ट्रेनें रद्द की गई हैं। एक ट्रेन के रूट में भी बदला है। रेलवे कई ट्रेनों के रेक का उपयोग महाकुंभ स्पेशल ट्रेनों के संचालन में कर रहा है। इससे उनकी कैंसिलेशन अवधि बढ़ा दी।

'अधर' में कतर में कैद 600 भारतीयों का भविष्य!

भारत-कतर में व्यापार-निवेश पर बनी बात, पर यहां हो रही मुश्किल

भारतीय नौसेना अधिकारी पर भी चल रही है सुनवाई, वापसी की मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कतर के अमीर शेख तमीम बिन हमद अल-सानी के बीच वार्ता में दोनों देशों के संबंधों को नई ऊंचाई पर ले जाने पर सहमति बनी। दोनों नेताओं ने व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी, ऊर्जा और लोगों से लोगों के संबंधों पर ध्यान केंद्रित करते हुए भारत-कतर संबंधों को रणनीतिक साझेदारी के स्तर तक ले जाने का फैसला किया। भारतीय विदेश मंत्रालय ने बताया कि कतर में अभी भी 600 भारतीय बंद हैं। इसके अलावा, एक भारतीय नौसेना के अधिकारी भी कैद में हैं। कतर के अमीर दो दिवसीय राजकीय यात्रा पर सोमवार को भारत पहुंचे हैं। दोनों देशों के बीच हुई बातचीत के बारे में विदेश मंत्रालय के अधिकारी अरुण कुमार चटर्जी ने बताया

कि नौसेना अधिकारी का मामला वहां की स्थानीय अदालतों में लंबित है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने अमीर और उनकी सरकार द्वारा भारतीय नागरिकों के संरक्षण और कल्याण के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। हालांकि विदेश मंत्रालय के सचिव ने सीधे तौर पर ये नहीं बताया कि क्या बात हुई है।

2024 में 85 को मिली माफी

विदेश मंत्रालय के अधिकारी ने बताया कि कतर में वर्तमान में लगभग 600 भारतीय नागरिक जेल में हैं। सचिव ने बताया कि समय-समय पर कतर की सरकार द्वारा क्षमा याचना के तहत भारतीय कैदियों को रिहा किया जाता है। वर्ष 2024 में अब तक 85 भारतीयों को माफी दी जा चुकी है। दोनों देशों के बीच कैदियों के ट्रांसफर पर एक समझौता भी हुआ है, लेकिन इसे अभी कतर सरकार की स्वीकृति मिलनी बाकी है। भारत और खाड़ी सहयोग परिषद के बीच मुक्त व्यापार समझौते को लेकर बातचीत चल रही है। भारत और कतर भी इस दिशा में संभावनाओं को तलाश रहे हैं। भारत और कतर ऊर्जा क्षेत्र में पहले से ही मजबूत साझेदार हैं। कतर भारत के लिए एलएनजी का प्रमुख आपूर्तिकर्ता है। फरवरी 2024 में कतर से 20 वर्षों के लिए करार हुआ।

5000 में बिक गए देश के गद्दार! अब कसा शिकंजा

- पाक को दे रहे थे नौसैनिक अड्डे की खुफिया जानकारी, एनआईए ने दबोचा

उत्तर कन्नड़ (एजेंसी)। कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ जिले से करवार नौसैनिक अड्डे की संवेदनशील जानकारी पाकिस्तान को लीक करने के आरोप में राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने दो व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है। जांच एजेंसी के सूत्रों के अनुसार, एनआईए की हैदराबाद टीम ने मंगलवार को मुदुगा गांव के वेताना टंडेल और हलावली के अक्षय नाइक को हिरासत में लिया। रिपोर्ट के मुताबिक, जांच एजेंसी का मानना है कि आरोपियों को पाकिस्तान की खुफिया एजेंसियों ने हनीट्रैप के जरिए अपने जाल में फंसाया। बताया जा रहा है कि 2023 में एक महिला एजेंट ने फेसबुक के माध्यम से उनसे संपर्क किया और उन्हें नौसैनिक गतिविधियों, युद्धपोतों की आवाजाही और सुरक्षा से जुड़ी जानकारी साझा करने के लिए उकसाया। एनआईए ने अगस्त 2024 में तीन लोगों टंडेल, नाइक और टोडुर गांव के सुनील से इस संदिग्ध जासूसी मामले में पूछताछ की थी।

वनमाली कथा समय एवं विष्णु खरे कविता सम्मान समारोह का भव्य शुभारंभ

साहित्य के साथ भाषा को कौशल की तरह आत्मसात करना जरूरी: संतोष चौबे

भोपाल। कला, साहित्य एवं संस्कृति के लिये समर्पित वनमाली सृजनपीठ द्वारा तीन दिवसीय वनमाली कथा समय एवं राष्ट्रीय विष्णु खरे कविता सम्मान समारोह का भव्य शुभारंभ रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में बुधवार को हुआ। समारोह के पहले सत्र में वरिष्ठ कहानीकार ममता कालिया, वनमाली कथा पत्रिका के प्रधान सम्पादक मुकेश वर्मा, तद्भव पत्रिका के सम्पादक अखिलेश, कहानीकार ओमा शर्मा ने 'समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य और वनमाली कथा' विषय पर सत्र में अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

आरएनटीयू के कुलाधिपति एवं वरिष्ठ कथाकार संतोष चौबे ने वनमाली कथा पत्रिका की पूरी यात्रा को संक्षेप में बताते हुए कहा कि 'भले ही हम छोटी जगहों में काम करेंगे, लेकिन हम अच्छी गुणवत्ता का काम करेंगे।' यह भी कहा कि 'लेखक को अपना एक्टिविजम कभी नहीं छोड़ना चाहिए, एक लेखक अंततः एक एक्टिविस्ट है।' परिचर्चा के विषय पर तद्भव पत्रिका के संपादक अखिलेश ने एक साहित्यक पत्रिका को वर्तमान समय में लगातार प्रकाशित करते रहने में पेश आने वाली चुनौतियों पर बात करते हुए कि इस समय जबकि डाक खर्च भी बढ़ गया है, कई साहित्यिक पत्रिकाओं ने प्रिंट फोर्मेट में पत्रिका निकालना बन्द कर दिया है। ऐसे समय में 'वनमाली कथा' जैसी लोकतांत्रिक और समावेशी पत्रिकाएँ बहुत साहस का काम कर रही हैं। वरिष्ठ कथाकार ओमा शर्मा ने

कहा कि 'रचना पर बात होनी चाहिए, जगह उतनी महत्पूर्ण नहीं है, वनमाली कथा रचनाओं पर बात करती है।' पत्रिका के प्रधान सम्पादक मुकेश वर्मा ने साहित्यिक पत्रकारिता के 90 के दशक के पहले तथा बाद के समय को विस्तार से आकलन करते हुए कहा कि 'यह समय किसी भी किस्म की सांत्वना नहीं देता, ऐसे समय में 'वनमाली कथा' एक ऐसी लोकतांत्रिक पत्रिका है जिसके द्वार सभी के लिए खुले हैं।

सत्र की अध्यक्षता कर रहीं वरिष्ठ कहानीकार ममता कालिया ने अपने उदबोधन में कहा कि 'यह ऐसा दौर है जहाँ आधा समाज चीज़ों को बेच रहा है और आधा समाज चीज़ों को खरीद रहा है। कार्यक्रम का संचालन वनमाली कथा पत्रिका के सम्पादक कुणाल सिंह ने किया तथा आभार आरएनटीयू की कुलसचिव संगीता जौहरी ने व्यक्त किया। सत्र 'मलयालम में हिंदी के रचनाकार' विषय पर परिचर्चा का आयोजन संतोष चौबे की अध्यक्षता में किया गया। उल्लेखनीय है कि इस सत्र में केरल के हिंदी-मलयाली साहित्यकारों के 20 सदस्यीय दल ने रचनात्मक भागीदारी की। परिचर्चा में केरल के वरिष्ठ हिंदी-मलयाली साहित्यकार डॉ. आरसु ने कहा कि केरल में हिंदी के लिए पहले से ही बहुत सकारात्मक वातावरण रहा है। मलयालम-हिंदी के वरिष्ठ अनुवादक डॉ. के.सी.अजय कुमार ने कहा कि हिंदी की मुख्यधारा में शामिल होने के लिए देवनागरी लिपि को आत्मसात करना बहुत जरूरी है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए संतोष चौबे ने कहा कि वर्तमान समय की सबसे बड़ी जरूरत है कि साहित्य के साथ-साथ भाषा को कौशल की तरह आत्मसात करना। इस अवसर पर विश्व रंग अंतरराष्ट्रीय हिंदी ओलम्पियाड-2025 के पोस्टर का लोकार्पण अतिथियों द्वारा किया गया। इसके साथ ही विश्व रंग के अंतर्गत हिंदी के 51 कथाकारों की हिंदी में रचित कहानियों के मलयालम में अनुवाद की पुस्तक 'कथायात्रा' तथा 'मध्यप्रदेश कथकल' का लोकार्पण भी अतिथियों द्वारा किया गया। दूसरे सत्र में संतोष चौबे, मुकेश वर्मा, अखिलेश, मनीषा कुलश्रेष्ठ द्वारा कहानी पाठ किया गया। इसमें संतोष चौबे द्वारा 'सपनों की दुनिया में ब्लैक होल', मनीषा कुलश्रेष्ठ द्वारा बच्चों पर कहानी का पाठ किया गया। वहीं लेखक अखिलेश द्वारा अपनी अप्रकाशित कहानी का अंश पाठ किया गया। सत्र की अध्यक्षता ममता कालिया ने की। संचालन डॉ. संगीता जौहरी द्वारा किया गया।

संतोष चौबे की कहानी 'लेखक बनाने वाले' की प्रस्तुति- वनमाली कथा समय समारोह में शाम के सत्र में रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के टैगोर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के द्वितीय वर्ष के छात्रों ने संतोष चौबे की कहानी 'लेखक बनाने वाले' की प्रस्तुति दी। इस कहानी का निर्देशन डॉ. चैतन्य आठले ने किया। इस दौरान राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक श्री देवेन्द्र राज अंकुर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

भारत को एक और झटका देने की तैयारी में है बांग्लादेश!

- चीन के साथ करने जा रहा बड़ा समझौता

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश के नागरिक अभी तक इलाज के लिए भारत आते थे लेकिन अब इलाज के लिए उनका नया ठिकाना चीन बन सकता है। बांग्लादेशी मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, भारत के साथ संबंधों में गिरावट आने के बाद अब बांग्लादेश के नागरिक जल्द ही इलाज करवाने के लिए चीन की तरफ जाना शुरू करेंगे। रिपोर्ट में कहा गया है कि अगर सब कुछ सही रहा तो अगले महीने, यानि मार्च से बांग्लादेशी मरीज इलाज के लिए चीन जाना शुरू कर देंगे। माना जा रहा है कि अगर बांग्लादेश के मरीज इलाज के लिए चीन का रुख करते हैं, तो कोलकाता के अस्पतालों को थोड़ी परेशानी उठानी पड़ सकती है। शेख हसीना की सरकार गिरने से पहले तक हर महीने बांग्लादेश के करीब 10 हजार मरीज इलाज के लिए कोलकाता आते थे। लेकिन अब बांग्लादेश मरीजों की संख्या में गिरावट आई है। जिसकी वजह से कोलकाता और त्रिपुरा के कई

अस्पतालों ने औसतन लगभग 10-15 फीसदी का राजस्व नुकसान दर्ज किया गया है। ढाका स्थित प्रोथोम एलो की रिपोर्ट में कहा गया है कि बांग्लादेश और चीन के बीच चल रही बातचीत के मुताबिक चीन के युन्नान प्रांत के तीन शीर्ष अस्पतालों को बांग्लादेश के मरीजों को भर्ती करने के लिए नामित किया गया है। इनमें युन्नान प्रांत का पहला पीपुल्स अस्पताल, कुनमिंग मेडिकल यूनिवर्सिटी का पहला संबद्ध अस्पताल और चीनी मेडिकल साइंस एकेडमी का फुवाई युन्नान अस्पताल शामिल हैं। बांग्लादेशी मरीजों के लिए चीन की सरकार के साथ उन्हें आसानी से वीजा उपलब्ध करवावे के लिए बातचीत चल रही है।

हमारे बीच कोई कोल्ड वॉर नहीं, मिलकर कर रहे काम

शिंदे ने फडणवीस के साथ अनबन की खबरों को किया खारिज

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के साथ किसी भी तरह के मतभेद की खबरों को खारिज कर दिया है। उन्होंने कहा कि महायुति गठबंधन में सब कुछ ठीक है और उनके बीच किसी भी तरह का कोई कोल्ड वॉर नहीं चल रहा है। इनके बीच अनबन की खबरें तब चर्चा में आई जब शिंदे ने मुख्यमंत्री रिलीफ फंड के जैसा मेडिकल सेल बना दिया। शिंदे के इस कदम को लेकर विपक्ष ने सवाल उठाए थे। शिंदे ने मंगलवार को कहा कि यह नया सेल किसी कॉम्पटिशन व्यवस्था के रूप में नहीं बल्कि मुख्यमंत्री के वॉर रूम के साथ मिलकर काम करेगा, ताकि मरीजों को बेहतर सेवाएं मिल सकें। फडणवीस ने भी विवाद को खारिज किया मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने भी मतभेद की खबरों को खारिज कर दिया है। उन्होंने कहा, इस तरह के सेल का गठन कोई गलत बात नहीं है, क्योंकि इसका मकसद जरूरतमंद लोगों की मदद करना है। जब मैं उपमुख्यमंत्री था, तब मैंने भी इसी तरह का सेल बनाया था। विपक्ष का आरोप, राज्य में दोहरी सरकार चल रही है शिंदे की यह सफाई विपक्षी दलों के आरोपों के बाद आई है, जिसमें शिवसेना (यूबीटी) के सांसद संजय राउत ने दावा किया था कि राज्य में समानांतर सरकार चलाई जा रही है।

सीएम भगवंत मान के आवास के बाहर हंगामा

- केंद्रीय मंत्री रवनीत बिट्टू के सुरक्षाकर्मियों और चंडीगढ़ पुलिस में तीखी बहस ● डिबेट के लिए केंद्रीय मंत्री मान के आवास पहुंचे, सिक्योरिटी ने घुसने नहीं दिया

चंडीगढ़ (एजेंसी)। केंद्रीय राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू को बुधवार को पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान से डिबेट करने के लिए उनके आवास पहुंच गए। सुरक्षा ने उन्हें अंदर जाने नहीं दिया और गेट पर ही रोक लिया। इसे लेकर बिट्टू की सिक्योरिटी और चंडीगढ़ पुलिस के अधिकारियों के बीच हाथापाई और धक्का-मुक्की तक हो गई। चंडीगढ़ पुलिस के अधिकारियों का कहना था कि उनके पास परमीशन नहीं थी इसलिए बिट्टू का काफिला रोक दिया। अधिकारियों ने पायलट गाड़ी के ड्राइवर को जबरन उतारने की कोशिश की। बिट्टू गाड़ी से उतरकर आए तो भी पुलिस अधिकारी सिक्योरिटी अफसर से बहस करते रहे। बिट्टू ने कहा, मैं अकेला यहां आया था। इन्होंने गालियां दीं।

1000-1000 रुपए में नकल 300-300 में असाइनमेंट

- पैसे लेकर परीक्षा में कॉलेज प्रशासन ने दी नकल की खुली छूट
- रीवा जिले के कॉलेज में नकल करते छात्रों का वीडियो वायरल

भोपाल। एमपी के रीवा जिले के चाकघाट स्थित एक अशासकीय महाविद्यालय में सामूहिक नकल का वीडियो सामने आया है। स्नातक की परीक्षा में छात्र खुलेआम नकल कर रहे हैं। नकल की छूट के लिए छात्रों ने कॉलेज प्रबंधन को रुपए दिए हैं। वीडियो में देख सकते हैं कि छात्र किताब और मोबाइल लेकर खुलेआम नकल कर रहे हैं। साथ ही वायरल वीडियो में दावा कर रहे हैं कि हमने रुपए दिए हैं। यह वीडियो चाकघाट के अशासकीय नेहरु स्मारक महाविद्यालय में आयोजित भोज मुक्त विश्विद्यालय की परीक्षा के दौरान का है। हालांकि मामला सामने आने के बाद अब जिम्मेदार अधिकारी टीम बनाकर जांच कराने की बात कह रहे है। पूरा मामला रीवा जिले के चाकघाट स्थित अशासकीय नेहरु स्मारक महाविद्यालय का है। कालेज में भोजमुक्त विश्विद्यालय की परीक्षा आयोजित की जा रही थी, परीक्षा के दौरान छात्र खुलेआम नकल कर रहे थे, नकल करते छात्र कैमरे में कैद हो गए हैं। विद्यार्थी परीक्षा के दौरान किताब और मोबाइल रखकर नकल करते वीडियो में नजर आ रहे हैं, जिसका वीडियो सोशल मीडिया में वायरल हो रहा है। वहां पर

मौजूद किसी व्यक्ति ने इसका वीडियो बना लिया जो अब सोशल मीडिया में वायरल हो रहा है। सोशल मीडिया में जो वीडियो वायरल हो रहा है, उसमें अलग-अलग कमरों में कई छात्र टेबल पर बैठकर परीक्षा दे रहे हैं। उनके पास मोबाइल भी है और किताबें भी, जो बड़े आराम से उससे देखकर नकल कर रहे हैं, जिसे कोई देखने वाला नहीं था। परीक्षा केंद्र में न तो कोई जिम्मेदार नजर आ रहा है न ही कोई शिक्षक। वीडियो देखकर यही लग रहा है की छात्रों को नकल करने की खुली छूट दे दी गई है, जिसके चलते वो बिना किसी डर के नकल करते नजर आ रहे हैं। बताया जा रहा है की महाविद्यालय प्रबंधन खुद ही छात्रों के लिए नकल की व्यवस्था करता है। वीडियो में छात्र दावा कर रहे हैं कि इसके लिए हर छात्र से 1 हजार से लेकर 15 सौ रुपए लिए जाते है। यही वजह है की वीडियो में साफ देखा जा सकता है की छात्रों को नकल करने की खुली छूट दे दी गई है। छात्र कहते सुने जा रहे हैं कि नकल के लिए 1000-1000 रुपए और असाइनमेंट के लिए 300-300 रुपए हैं।

महाकुंभ पर ममता के बयान पर बरसे सीएम डा यादव

- कहा-भविष्य में लोग उन्हें सबक सिखाएंगे, सीएम का सख्त पलटवार
- सीएम ने मृत्युकुंभ वाले बयान पर ममता बनर्जी से की माफी की मांग

भोपाल। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव और मंत्री कृष्णा गौर ने बुधवार को पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की महाकुंभ मेले पर की गई 'मृत्यु कुंभ' टिप्पणी की कड़ी आलोचना की। उन्होंने बनर्जी से माफी की मांग की, जिन्होंने धार्मिक समारोह में अपर्याप्त व्यवस्था और भगदड़ की आशंका जताई थी। यादव ने महाकुंभ के धार्मिक महत्व पर जोर देते हुए बनर्जी के शब्दों की निंदा की। यादव ने कहा कि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बेहद घटिया भाषा का इस्तेमाल किया है। महाकुंभ आस्था, श्रद्धा और विश्वास का पर्व है। इस तरह की टिप्पणी करना हिंदू धर्म का अपमान है। उनकी टिप्पणी उनकी मानसिकता को दर्शाती है। यही कारण है कि लोग उनके जैसे संगठनों में अपना विश्वास खो रहे हैं। मुझे उम्मीद है कि लोग भविष्य में उन्हें और सबक सिखाएंगे। मुझे समझ नहीं आता कि कांग्रेस और उसके साथ चलने वालों को हिंदू धर्म से क्या आपत्ति है। ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि दें और उन्हें माफ़ी मांगनी चाहिए। मध्य प्रदेश की मंत्री कृष्णा गौर ने भी बनर्जी की

आलोचना में शामिल होते हुए उन्हें 'राष्ट्र का कलंक' बताया। गौर ने कहा कि मैं उनकी टिप्पणी की कड़ी निंदा करती हूं और पूरे देश में इसकी निंदा हो रही है। पूरा देश महाकुंभ में पवित्र स्नान करने के लिए लगातार प्रयागराज पहुंच रहा है। कष्टों के बावजूद, सभी की इच्छा पवित्र स्नान करने की होती है, कोई भी इस पल को चूकना नहीं चाहता। ऐसे में ममता बनर्जी जैसे लोग, जो सनातनियों की आस्था का अपमान करते हैं, देश में कलंक हैं जो महाकुंभ के बारे में ऐसी अतार्किक टिप्पणियां करते हैं। पूरा देश ममता बनर्जी के इस बयान की निंदा कर रहा है। उन्होंने कहा कि हम सभी मांग करते हैं कि ममता बनर्जी देश के सनातनियों से और हिंदू धर्म के श्रद्धालुओं से माफ़ी मांगें। ममता बनर्जी का चरित्र देश के सामने पूरी तरह से बेनकाब हो गया है। यह विवाद बनर्जी की मंगलवार को विधानसभा में की गई टिप्पणी के बाद शुरू हुआ, जहां उन्होंने 29 जनवरी को प्रयागराज और 15 फरवरी को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुई भगदड़ का जिक्र किया था। बनर्जी ने विधानसभा में कहा था कि यह 'मृत्यु कुंभ' है... मैं महाकुंभ का सम्मान करती हूं, मैं पवित्र गंगा मां का सम्मान करती हूँ। लेकिन कोई योजना नहीं है... कितने लोगों को बचाया गया है? उन्होंने अमीर और गरीब उपस्थित लोगों के बीच व्यवस्था में असमानता पर भी प्रकाश डाला, यह देखते हुए कि वीआईपी कैंप की लागत 1 लाख रुपए तक है, जबकि गरीबों के लिए अपर्याप्त व्यवस्था है।

सिकल सेल एनीमिया के उपचार के लिए सरकार प्रतिबद्ध : शुक्ल

कहा-प्रमाणित और उच्च गुणवत्ता वाली दवाओं का ही किया जाये उपयोग

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने सिकल सेल एनीमिया के बेहतर प्रबंधन और उपचार की व्यवस्थाओं पर विस्तृत चर्चा की। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने निर्देश दिए कि सिकल सेल एनीमिया के उपचार के लिये प्रमाणित और उच्च गुणवत्ता वाली दवाओं का ही उपयोग सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने दवा आपूर्ति श्रृंखला को सुचारु बनाए रखने और गुणवत्तायुक्त दवाओं की उपलब्धता पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने मंत्रालय में विभागीय विषयों की समीक्षा भी की। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने प्रधानमंत्री-आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (पीएम-अभीम) के तहत चल रहे अधोसंरचना विकास कार्यों की समीक्षा की और अधिकारियों को समयबद्ध रूप से कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि नवीन जिला चिकित्सालयों के निर्माण कार्यों को प्राथमिकता से पूरा किया जाए ताकि नागरिकों को जल्द से जल्द उन्नत स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हो सकें। उप मुख्यमंत्री ने सुपरस्पेशलिटी अस्पतालों में विशेषज्ञ डॉक्टरों की उपलब्धता सुनिश्चित करने तथा उनके मानदेय एवं अन्य प्रोत्साहन उपायों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने अधिकारियों को इस संबंध में प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश दिए, जिससे विशेषज्ञ डॉक्टरों की सेवाओं को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके। प्रमुख सचिव लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा श्री संदीप यादव, एमडी एमपीपीएचएससीएल श्री मयंक अग्रवाल, संचालक श्री प्रवीण सिंह अढ़ायच, एमडी एनएचएम डॉ. सलोनी सिडाना सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रदेश के युवाओं को रोजगार-स्वरोजगार से जोड़ेगी सरकार

सीएम बोले-इसके लिए राज्य सरकार संकल्पित

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश के शासकीय स्कूलों की हायर सेकेंड्री बोर्ड परीक्षा में प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के बैंक खाते में शुक्रवार 21 फरवरी को सिंगल क्लिक के माध्यम से लैपटॉप की राशि अंतरित की जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश के छात्र-छात्राओं को लैपटॉप के लिए 25-25 हजार रुपए की राशि प्रदान की जाएगी। लैपटॉप विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा और केरियर के अन्य लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मीडिया को जारी संदेश के माध्यम से मेधावी विद्यार्थियों को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि उच्च शिक्षा और कौशल उन्नयन के माध्यम से प्रदेश के होनहार युवाओं को आगे बढ़ने के लिए राज्य सरकार हरसंभव सहयोग प्रदान कर रही है। प्रदेश के युवाओं को रोजगार और स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार पूरी तरह संकल्पित है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प के अनुक्रम में प्रदेश में हर स्तर पर युवाओं को रोजगार से जोड़ने की दिशा में कार्य कर रही है। कई सरकारी विभागों में रिक्त पदों पर भर्ती के लिए विज्ञापन जारी किए जा चुके हैं।

शहर में शिवाजी जन्मोत्सव में तहसीलदार ने माइक बंद कराया

लोगों ने प्रतिमा के सामने दिया धरना, तहसीलदार के माफी मांगने के बाद हटे

भोपाल। भोपाल में छत्रपति शिवाजी जन्मोत्सव के कार्यक्रम में साउंड सिस्टम का माइक बंद कराने की बात को लेकर लोग नाराज हो गए। उन्होंने लिंक रोड नंबर-1 पर शिवाजी की प्रतिमा के सामने धरना दे दिया। टीटी नगर तहसीलदार कुणाल राउत के प्रतिमा के सामने ही माफी मांगने के बाद वे हटे। मामला बुधवार दोपहर का है। बीजेपी पार्षद पप्पू विलास घाड़गे ने बताया, लिंक रोड नंबर-1 स्थित रेडक्रॉस अस्पताल के पास चौराहे पर छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा स्थापित है। यहां पिछले 20 साल से हर 19 फरवरी को जन्मोत्सव कार्यक्रम करते हैं। बुधवार को भी कार्यक्रम रखा गया था। इस दौरान तहसीलदार राउत आए और साउंड सिस्टम-टेंट हटा दिया। इसके विरोध में धरना प्रदर्शन किया। इस दौरान उन्होंने तहसीलदार के खिलाफ नारेबाजी भी की। प्रदर्शन के दौरान छत्रपति शिवाजी महाराज की वेशभूषा में एक युवक को भी शामिल किया गया। साउंड सिस्टम और टेंट हटाने की बात को लेकर मराठा समाज के लोगों ने धरना प्रदर्शन किया। वे सड़क पर ही धरने पर बैठ गए। इससे पुलिस मौके पर पहुंची और ट्रैफिक डायवर्ट कर दिया। इधर, तहसीलदार कुणाल भी मौके पर पहुंचे और समाजजनों को समझाइश दी। प्रतिमा के सामने माफी मांगने पर समाजजन हट गए। इस मामले में तहसीलदार रावत ने कहा कि साउंड सिस्टम या कार्यक्रम की अनुमति नहीं थी। मैं सिर्फ साउंड सिस्टम बंद करने को कहा था। समाजजनों को कोई गलतफहमी हो गई थी। मेरा गलत उद्देश्य नहीं था। समाजजनों के कहने पर मैंने शिवाजी महाराज से माफी भी मांग ली।

कांग्रेस के नए प्रभारी से अलग-अलग मिले पटवारी-सिंघार

बीजेपी नेता बोले-यह गुटबाजी कैंसर, पहली बार भोपाल आएंगे हरीश चौधरी

भोपाल। मप्र में कांग्रेस को एक तरफ जहां चुनावों में हार का सामना करना पड़ रहा है, दूसरी तरफ कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी भी टिक नहीं पा रहे हैं। तीन सालों में चार प्रभारी बदले जा चुके हैं। तीन दिन पहले भंवर जितेन्द्र सिंह को हटाकर राजस्थान के बायतू से विधायक हरीश चौधरी को मप्र का प्रभारी बनाया गया है। नए प्रभारी की नियुक्त होने के बाद पीसीसी चीफ जीतू पटवारी और नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने दिल्ली में उनसे अलग-अलग मुलाकात की। ऐसे में बीजेपी नेता नरेंद्र सलूजा ने ट्वीट कर इस मुलाकात को कांग्रेस में गुटबाजी का कैंसर बताया। कांग्रेस के नए प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी कल पहली बार भोपाल आएंगे। वे पीसीसी में कांग्रेस के प्रमुख नेताओं, कार्यकर्ताओं, विधायकों, पदाधिकारियों के साथ परिचयात्मक बैठक लेकर मेल-मुलाकात करेंगे। मप्र कांग्रेस के निवर्तमान प्रभारी भंवर जितेन्द्र सिंह विधानसभा चुनाव 2023 में स्क्रीनिंग कमेटी के अध्यक्ष थे। विधानसभा की 230 सीटों में से कांग्रेस को मात्र 66 सीटें मिलीं थीं। 163 सीटें बीजेपी और एक बीएपी ने जीती थी। विधानसभा चुनाव के दौरान रणदीप सिंह सुरजेवाला प्रभारी थे। चुनाव में हार के बाद सुरजेवाला को हटाकर जितेन्द्र को प्रभारी बनाया गया था। लेकिन, लोकसभा चुनाव में मप्र की सभी 29 सीटों पर कांग्रेस को हार का मुंह देखना पड़ा। भंवर जितेन्द्र सिंह के खिलाफ लगातार कांग्रेस आलाकमान तक ये शिकायतें पहुंच रहीं थीं कि वे गुटीय राजनीति को बढ़ावा दे रहे हैं। कुछेक लोगों के इशारे पर सारे फैसले हो रहे हैं। इसके बाद भंवर जितेन्द्र सिंह को हटाकर हरीश चौधरी को कमान दी गई है। सोमवार को पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने दिल्ली में कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी से भी मुलाकात की। पटवारी ने मप्र में संगठन की स्थिति और आगामी कार्यक्रमों, संगठन विस्तार और सुदृढ़ीकरण को लेकर जानकारी दी। मोहन प्रकाश की जगह सितंबर 2017 में दीपक बावरिया को प्रदेश प्रभारी बनाया गया था।

मप्र में नक्सलवाद और हिंसक के लिए कोई स्थान नहीं : सीएम

बालाघाट में मध्यप्रदेश पुलिस के साथ मुठभेड़ में 3 महिला नक्सली ढेर, मुख्यमंत्री ने दी बधाई

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने नक्सलियों के विरूद्ध चलाए जा रहे अभियान में बालाघाट में मिली सफलता के लिए म.प्र. पुलिस को बधाई दी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि बालाघाट जिले में पुलिस और नक्सलियों के बीच हुई मुठभेड़ में तीन महिला नक्सली मारी गईं। तलाशी अभियान के दौरान उनके पास से भारी मात्रा में हथियार और गोला बारूद जब्त किया गया है। बाकी बचे नक्सलियों को पुलिस माकूल जवाब दे रही है। उन्होंने सफल अभियान के लिए म.प्र. पुलिस की सराहना की और जवानों का मनोबल बढ़ाया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश में नक्सलवाद और हिंसक गतिविधियों के लिए कोई स्थान नहीं है। राज्य पुलिस इन पर अंकुश लगाने के लिए पूरी सक्रियता के साथ कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल मार्गदर्शन में केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह द्वारा देशभर में नक्सल विरोधी अभियान संचालित है। केंद्र सरकार सभी राज्यों से वर्ष 2026 तक नक्सलवाद को जड़ से समाप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है। राज्य सरकार इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पूर्णतः सक्रिय है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश पुलिस की कुशल रणनीति के फलस्वरूप बालाघाट में नक्सली बैकफुट पर आ चुके हैं। राज्य में कहीं भी नक्सल गतिविधियां संचालित न हो, इसके लिए पूरी सतर्कता बरती जा रही है। पुलिसकर्मी अपनी जान की बाजी लगाकर दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं। राज्य सरकार ने बालाघाट और जहां आवश्यक हो, वहां नक्सलियों से निपटने के लिए समुचित व्यवस्था की हैं।

राजधानी में 8वीं के स्टूडेंट ने हॉस्टल में लगाई फांसी

भोपाल में सेंट जोसफ स्कूल में पढ़ता था,सुसाइड नोट में लिखा-आगे जाने क्या होगा

भोपाल। भोपाल के सेंट जोसफ स्कूल के हॉस्टल में 8वीं के छात्र ने फांसी लगा ली। छात्र के पिता ने कहा- मेरा बेटा हिम्मत वाला था, ऐसा कदम नहीं उठा सकता। उसके साथ कुछ गलत हुआ है। मामला स्कूल के तारा सेवनिया हॉस्टल में मंगलवार शाम करीब साढ़े 7 बजे का है। परवलिया पुलिस ने बुधवार दोपहर पोस्टमॉर्ट्म के बाद शव परिजन को सौंपा। थाना प्रभारी रोहित सिंह नागर ने बताया- 14 साल के वंश के पिता संतोष कुशवाह नवीन नगर, ऐशबाग में रहते हैं। उनका बेटा दो साल से सेंट जोसफ स्कूल में पढ़ रहा था। वहीं हॉस्टल में रहता था। मंगलवार शाम योगा क्लास से आने के बाद उसने अपने कमरे में टॉवेल का फंदा बनाकर फांसी लगा ली। फंदा खिड़की पर बांधा था। वार्डन की सूचना पर पुलिस हॉस्टल पहुंची। एफएसएल टीम की निगरानी में रूम की तलाशी ली गई। यहां कॉपी का फटा पन्ना मिला। इस पर अंग्रेजी में सात-आठ लाइनें लिखी हैं। इनका हिंदी अनुवाद है- आगे मेरी जिंदगी में क्या होगा, कुछ समझ नहीं आता। ऐसे कोई कैसे धोखा दे सकता है। हालांकि, इसमें किसी की कोई गलती नहीं है। सब अच्छे हैं। पता नहीं, आगे क्या होगा। हैंड राइटिंग एक्सपर्ट्स इस पर लिखी राइटिंग और वंश की हैंड राइटिंग का मिलान कर रहे हैं। पुलिस ने हॉस्टल के सीसीटीवी फुटेज चेक किए। इसमें दिखा कि वंश मंगलवार शाम योगा क्लास अटैंड कर अपने रूम में आया। पानी की बॉटल लेकर उसे भरने बाहर आया। बॉटल भरने के बाद रूम में लौट गया। इसके बाद उसके रूम में रहने वाले तीन अन्य

वंश कुशवाह

बच्चे मैस में खाना खाने चले गए। उन्होंने लौटकर देखा तो वंश फांसी लगा चुका था। रूम का गेट बाहर से खुला था। इस दौरान सीसीटीवी कैमरे में वंश के रूम में कोई आता-जाता नहीं दिखा है। वंश के पिता संतोष ऐशबाग में प्राइमरी स्कूल चलाते हैं। वंश से बड़ी एक बहन और छोटा एक भाई है। वंश के पिता ने कहा- बेटा एक्टिव था। पढ़ाई से लेकर स्पोर्ट्स एक्टिविटीज में सक्रिय रहता था। योगा भी करता था। मंगलवार दोपहर 3:30 बजे उसने हॉस्टल से ही कॉल कर मां से बात की थी। इस दौरान किसी परेशानी का जिक्र नहीं किया। बातचीत में सब कुछ नार्मल लग रहा था। उसने मुझ से भी बात की। मेरा बेटा आर्मी स्कूल में भर्ती होने की तैयारी कर रहा था। साइंटिस्ट बनना चाहता था। संतोष ने बताया कि जिस खिड़की से फंदा लगाकर सुसाइड करना बताया जा रहा है, उसकी हाइट काफी कम है। टॉवेल भी काफी मोटा था। इससे आसानी से गांठ नहीं लग सकती। मुझे शक है कि उसके साथ कुछ गलत हुआ है। मामले की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। वंश के पिता का आरोप है कि घटना शाम करीब साढ़े सात बजे की है। हमें करीब साढ़े नौ बजे सूचना दी गई। जब अस्पताल पहुंचे तो बेटे को स्ट्रेचर पर देखा। अस्पताल वाले उसे छूने तक नहीं दे रहे थे। किसी ने उसे बचाने की कोशिश नहीं की। अस्पताल वाले इलाज नहीं कर रहे थे तो हॉस्टल स्टाफ उसे दूसरे अस्पताल क्यों नहीं ले गया? जब पोस्टमार्ट्म हुआ, तब भी स्कूल और हॉस्टल से कोई नहीं आया।

संपादकीय

चुनाव आयोग की साख बचाने की चुनौती

देश के मुख्य चुनाव आयुक्त के पद पर केरल कैडर के 1988 बैच के अधिकारी तथा वर्तमान में चुनाव आयुक्त की नियुक्ति पर लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी द्वारा उठाए जा रहे सवाल बहुत तार्किक नहीं लगते। मोदी सरकार ने पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार के रिटायरमेंट के एक दिन पूर्व नई दिल्ली में प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में तीन सदस्यों वाली समिति की बैठक बुलाकर ज्ञानेश कुमार के नाम पर मुहर लगाई। सीईसी चयन के नए कानून के तहत यह पहली नियुक्ति है। इसके पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त चयन समिति में सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश भी सदस्य होते थे। लेकिन मोदी सरकार ने इस कानून में संशोधन कर इसमें मुख्य न्यायाधीश की जगह केन्द्रीय गृह मंत्री को शामिल कर दिया। इससे कोई भी फैसला बहुमत से होना तय हो गया। वर्तमान में इस समिति में प्रधानमंत्री, केन्द्रीय गृह मंत्री तथा लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष सदस्य होते हैं। बताया जाता है कि राहुल गांधी सीईसी नियुक्ति प्रक्रिया पर अपनी आपत्ति जताते हुए पहले ही बैठक से चले गए थे। इस पूरे मामले में राहुल गांधी और उनकी पार्टी कांग्रेस का स्टैंड यह रहा है कि मोदी सरकार मुख्य चुनाव आयुक्त के चयन के लिए 2023 में जो नया क़ानून 'द चीफ़ इलेक्शन कमिश्नर एंड अदर इलेक्शन कमिश्नर एक्ट' लेकर आई है, उसे सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई है। अभी तक सुप्रीम कोर्ट ने इसे लेकर तीन ऑर्डर पास किए हैं और अगली सुनवाई 19 फ़रवरी को होनी थी। कांग्रेस का तर्क था कि चूंकि इस मामले में जल्द ही सुनवाई होनी है तो सीईसी की नियुक्ति की सरकार को इतनी जल्दी क्या है। इस मामले में कोर्ट के रूख के बाद ही कोई निर्णय लिया जाना चाहिए। जाहिर है कि मोदी सरकार ने कांग्रेस की आपत्ति को दरकिनार कर बैठक बुलाई और राहुल गांधी ने भी अपना विरोध दर्ज करा दिया। जहां तक सीईसी चयन समिति में बदलाव का सवाल है तो यह अधिकार सरकार और संसद को है कि वो किसे चयन समिति में रखती है। एक मुद्दा यह भी है कि जिस सीईसी का चयन पूर्व में सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश की सदस्यता वाली समिति द्वारा किया जाता था, उस सीईसी के खिलाफ किसी भी कदाचार का मामला अगर सुप्रीम में जाएगा तो सीजेआई उस पर किस नैतिक अधिकार से सुनवाई करेंगे? क्योंकि उसके चयन में सीजेआई की भी सहमति रही है। वैसे भी सीईसी कौन बने यह शुद्ध रूप से सरकार का निर्णय है। क्योंकि सीमित न्यायिक अधिकार होने के बाद भी यह मुख्यतः कार्यकारी पद है। अगर देश के पहले चुनाव आयुक्त सुकुमार सेन की नियुक्ति की ही बात करें तो उनकी तैनाती पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने पश्चिम बंगाल के तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ.बी.सी.रॉय की सिफारिश पर की थी। ज्ञानेश कुमार को लेकर भी विपक्ष को संदेह है कि वो केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह के करीबी रहे हैं, इसलिए उन्हें सीईसी बनाया गया है। यह शंका सही हो भी सकती है, लेकिन ज्ञानेश कुमार तीनों चुनाव आयुक्तों में सबसे वरिष्ठ भी हैं। दूसरे, वो भारत सरकार के कई अहम फैसलों में शामिल रहे हैं। ऐसे में विपक्ष की आपत्ति विरोध के लिए विरोध ज्यादा लगती है। सीईसी चयन प्रक्रिया पर शीर्ष अदालत क्या फैसला देगी, अभी कहना मुश्किल है। लेकिन ज्ञानेश कुमार के सामने सबसे बड़ी चुनौती चुनाव आयोग की साख और निष्पक्षता को कायम रखने की है। क्योंकि हाल में निवृत्त मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार के कई फैसलों और टिप्पणियों से यह संदेश गया है कि आयोग सरकार के दबाव में अथवा उसके अनुकूल ज्यादा काम कर रहा है। उम्मीद की जानी चाहिए कि ज्ञानेश कुमार आयोग की प्रतिष्ठा को कायम रखने की जिम्मेदारी को पूरी ईमानदारी से निभाएंगे।

नजरिया

श्याम कुमार कोलारे
लेखक वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

शिक्षा सुधार में असरकारी साबित हो रही नीतियां

कोरोनाकाल में एक लम्बे समय तक स्कूल एवं शिक्षा संस्थान बंद रहे, शिक्षा में इस बदलाव से पढ़ाई बहुत बाधित हुई। उस समय पालकों का भी एक स्थान से दूसरे स्थानों में पलायन होने के कारण बहुत से बच्चों का नामांकन भी प्रभावित हुआ। कोरोना के बाद बच्चे के नामांकन के विषय में यह संभावना थी कि बच्चे, विशेष रूप से बड़े बच्चे, महामारी द्वारा परिवारों में आई वित्तीय कठिनाइयों के कारण स्कूल छोड़ देंगे, यह अनुमान निराधार रहा। वास्तव में, बड़े बच्चों (15-16 वर्ष के बच्चों) का नामांकन दर लगातार बढ़ रहा है, इसके अलावा वर्तमान में नामांकित नहीं होने वाले 6-14 वर्षीय बच्चों का अनुपात 1.6 प्रतिशत तक कम हो गया है - जो 2018 में देखे गए अनुपात का लगभग आधा है, और बच्चों के मुफ्त और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के लागू होने के बाद से एक दशक में सबसे कम है।

हालांकि, 2022 में नामांकन में हमने एक बड़ा बदलाव देखा, वह सरकारी स्कूलों में नामांकन में उछाल था जो 2016 से लगातार गिर रहा था। सरकारी स्कूलों में नामांकित 6-14 वर्षीय बच्चों का अनुपात 2018 में 65.6 प्रतिशत से बढ़कर 2022 में 72.9 प्रतिशत हो गया था। कोरोनाकाल में बच्चों की सीखने स्थिति की बात करें तो बहुत से आंकड़े बताते है कि सरकारी और निजी दोनों स्कूलों में बच्चों के पढ़ने के स्तर में हानि हुई। कक्षा तीन और पांच के बच्चों के लिए पढ़ने का स्तर, जो 2014 और 2018 के बीच धीरे-धीरे बढ़ रहा था, 2022 में यह स्तर से नीचे गिर गया था बच्चों में 'लर्निंग लॉस' देखने को मिल रहा था। महामारी के दौरान कई कम लागत वाले निजी स्कूल बंद हो गए, जिसके कारण सरकारी स्कूलों में नामांकन बढ़ सकता है। इसके अलावा, महामारी से प्रेरित वित्तीय तनाव के कारण माता-पिता अपने बच्चों को मुफ़्त शिक्षा के सरकारी स्कूलों में भेज रहे थे, देश अभी भी महामारी के बाद के हालात से निपट रहा था और यह कहना जल्दबाजी होगी कि सरकारी स्कूलों में नामांकन में वृद्धि एक अस्थायी या स्थायी बदलाव था। असर 2024 के अनुसार नामांकन की स्थिति एक अच्छी खबर है। बड़े आयु समूहों के लिए स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या जो लगातार गिर रही है, जो 2018 के स्तर से काफी नीचे है, सरकारी और निजी स्कूलों में नामांकन 2018 के स्तर पर वापस आ गया है।

इससे यह पुष्टि होती है कि कोविड के वर्षों के दौरान सरकारी स्कूलों में नामांकन में वृद्धि पसंद के बजाय आवश्यकता से अधिक प्रेरित थी।

ग्रामीण भारत में, सरकारी स्कूल हमेशा सीखने के स्तर के मामले में निजी स्कूलों से पीछे रहे हैं। सरकारी और निजी स्कूलों के बीच सीखने के अंतर एक बहुत बड़े तथ्य को उजागर करता है। निजी स्कूलों में जाने वाले बच्चे अधिक संपन्न घरों से आते हैं और उनके माता-पिता अधिक शिक्षित होते हैं - घरेलू विशेषताएँ जो सीखने से सकारात्मक रूप से संबंधित हैं। इसलिए, सीखने के स्तर में पूरे अंतर को स्कूल के प्रभाव के लिए जिम्मेदार ठहराना गलत है। फिर भी, इन घरेलू विशेषताओं को नियंत्रित करने के बाद भी, निजी स्कूलों में सरकारी स्कूलों की तुलना में सीखने में बढ़त है। एनुअल स्टेटस ऑफ़ एजुकेशन रिपोर्ट 2024 के आंकड़ों में हम जो देखते हैं, वह यह है कि सुधार वास्तव में सरकारी स्कूलों में हुआ है, निजी स्कूलों में सीखने का स्तर अभी भी उनके महामारी से पहले के स्तर से नीचे है। उदाहरण के लिए, 2018 में कक्षा 3 के निजी स्कूलों में 40.6 प्रतिशत की तुलना में सरकारी स्कूलों में 20.9 प्रतिशत बच्चे, कक्षा 2 के स्तर का पाठ पढ़ने में सक्षम थे। 2022 में, जबकि सभी स्कूलों में सीखने के स्तर में गिरावट आई, सरकारी स्कूलों में कक्षा 3 के बच्चे जो कक्षा 2 के स्तर पर पढ़ने में सक्षम 16.3 प्रतिशत से बढ़कर 2024 में 23.4 प्रतिशत हो गया है। निजी स्कूलों में सीखने के स्तर में सुधार धीमा था- 2022 में निजी स्कूल में कक्षा 3 के 33.1 प्रतिशत कक्षा 2 स्तर का पाठ पढ़ सकते थे जो 2024 में कुछ ही सुधार से 35.5 प्रतिशत तक पहुँचा है।

सीखने के स्तर में अचानक सुधार किस वजह से हुआ है? राष्ट्रीय अनुमानों में बदलाव आम तौर पर धीमा होता है और सीखने का स्तर जो 2010 तक स्थिर था, उसके बाद थोड़ा कम हुआ, केवल 2014 और 2018 के बीच धीरे-धीरे सुधार हुआ । यह सब कुछ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक कौशल पर फोकस की ओर इशारा करता है। हालाँकि यह पहली बार नहीं है कि सीखने में सुधार के लिए कार्यक्रम पेश किए गए हैं, लेकिन जो अलग है वह यह है कि यह पहली बार है कि बुनियादी सीखने के परिणामों को बेहतर बनाने के लिए एक व्यवस्थित राष्ट्रीय प्रयास किया गया है। आम तौर पर, पिछले वर्षों में स्कूल के शिक्षक 'पाठ्यक्रम को पूरा करने' के लिए काम करते थे। नतीजतन, सीखने के स्तर और गुणवत्तापूर्ण पढ़ाई पर ध्यान देना चुनौतीपूर्ण काम होता था। पहली बार, देश भर के शिक्षकों को बुनियादी कौशल पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एक अलग कार्य दिया गया है, जिसके माध्यम से शिक्षा में सकारात्मक बदलाव देखने के लिए मिलने लगे है। कुछ राज्यों में सीखने के स्तर में बहुत अच्छा सुधार देखने को मिलता है, कुछ राज्यों ने महामारी-पूर्व सीखने के स्तर में आई कमी को पार कर लिया है, और अन्य अभी भी पूरी तरह से ठीक नहीं हुए हैं। फिर भी, लगभग सभी राज्यों में 2022 की तुलना में सुधार दिखाई देता है। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और तमिलनाडु जैसे कम प्रदर्शन करने वाले राज्यों में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ है। उदाहरण के लिए, मध्य प्रदेश के मामले पर विचार करें - 2014 में, सरकारी स्कूल के कक्षा 3 के केवल 8.1 प्रतिशत बच्चे कक्षा 2 के स्तर का पाठ पढ़ सकते थे, और 2018 में यह अनुपात धीरे-धीरे बढ़कर 10.4 प्रतिशत हो गया। 2022 में कक्षा 3 यह अनुपात घटकर 7.9 प्रतिशत हो गया था। 2024 में, कक्षा 2 के स्तर पर पढ़ने में सक्षम सरकारी स्कूल के कक्षा 3 के बच्चों का अनुपात लगभग दोगुना बढ़कर 14.8 प्रतिशत हो गया है। इस तरह के सुधार को सिर्फ़ सुधार नहीं कहा जा सकता, यह एफएलएन क्षमताओं को बेहतर बनाने के लिए गंभीर ध्यान और प्रयास को दर्शाता है। इस प्रयास ने अंकगणित में, कक्षा 5 के सीखने के स्तर में भी अच्छा परिणाम दिया है - मध्य प्रदेश के सरकारी स्कूलों में सीखने का स्तर पिछले 20 वर्षों में कभी इतना अधिक नहीं रहा।

एक महत्वपूर्ण बात यह है कि मध्य प्रदेश जो हमेशा से कम उपस्थिति वाला राज्य रहा है, प्राथमिक विद्यालयों में उपस्थिति 2018 से 60 प्रतिशत से कम रही है, जो अभी भी सामान बनी हुई है। स्कूलों में बच्चों की उनके सीखने के परिणामों को स्पष्ट रूप प्रभावित करती है, मध्यप्रदेश ने बच्चों का सार्वभौमिक नामांकन करने में सफलता पा ली है परन्तु बच्चों को स्कूल तक लाना एक बहुत बड़ी चौनौती है, जिस पर तुरंत उपचारात्मक कार्य करने की आवश्यकता है। बच्चों की उपस्थिति के अनुपात में सीखने के स्तर में भी सुधार के परिणाम देखे जा सकते है। कुछ राज्यों ने सीखने के स्तर में में बड़ी बढ़त दर्ज की है, जो महामारी के कारण सीखने में आई कमी की लगभग भरपाई है। यह स्पष्ट है कि पहली बार, देश प्राथमिक विद्यालय के बच्चों में मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता में सुधार के एक मिशन की ओर एकजुट हो रहा है।

यू.एस. इंडिया कॉम्पैक्ट

डॉ. सत्यवान सौरभ
लेखक स्तंभकार हैं।

अमेरिका-भारत सम्बंधों के पक्ष में माहौल

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड जे. ट्रम्प जूनियर ने 13 फरवरी, 2025 को वाशिंगटन डीसी में भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का आधिकारिक कार्य यात्रा के लिए स्वागत किया। राष्ट्रपति ट्रम्प और प्रधानमंत्री मोदी ने स्वतंत्र और गतिशील लोकतंत्रों के नेताओं के रूप में भारत-अमेरिका साझेदारी की ताकत की पुष्टि की, जो स्वतंत्रता, मानवाधिकार, कानून और बहुलवाद का सम्मान करते हैं। आपसी विश्वास, साझा हित, सद्भावना और सक्रिय नागरिक भागीदारी इस व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी की नींव के रूप में काम करते हैं। राष्ट्रपति ट्रम्प और प्रधानमंत्री मोदी ने 'यू.एस. इंडिया कॉम्पैक्ट' नामक एक बिल्कुल नया कार्यक्रम पेश किया, जिसका अर्थ है 'सैन्य साझेदारी, त्वरित वाणिज्य और प्रौद्योगिकी के लिए अवसरों को उत्प्रेरित करना', जिसका उद्देश्य इक्कीसवीं सदी में सहयोग के कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में क्रांति लाना है। रणनीतिक और आर्थिक वातावरण लगातार अंतरराष्ट्रीय गठबंधनों द्वारा नया रूप ले रहे हैं। कई क्षेत्रों में, भारत के बढ़ते नवाचार और अमेरिका की तकनीकी श्रेष्ठता एक दूसरे से मिलती है। भारत को 45 बिलियन के अधिशेष से लाभ होने के साथ, द्विपक्षीय व्यापार .118 बिलियन से ऊपर चला गया। प्रगतिशील आर्थिक सम्बंधों के माध्यम से, यह साझेदारी अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को नया रूप देती है, सुरक्षा में सुधार करती है और आपसी विकास को बढ़ावा देती है। अमेरिका और भारत के बीच व्यापार, रक्षा और प्रौद्योगिकी सभी में वृद्धि हुई है।

संचार संगतता और सुरक्षा समझौता और बेसिक एक्सचेंज ऐंड कोऑपरेशन एग्रीमेंट जैसे महत्त्वपूर्ण समझौते, जो प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और रक्षा रसद में घनिष्ठ सहयोग की गारंटी देते हैं, पर अमेरिका और भारत ने हस्ताक्षर किए हैं। लक्षित सैन्य अभियानों के लिए भारत को अमेरिकी भू-स्थानिक खुफिया जानकारी तक पहुँच प्रदान करके, 2020 बेसिक एक्सचेंज ऐंड कोऑपरेशन एग्रीमेंट समझौते ने हिंद महासागर क्षेत्र में स्थितिजन्य जागरूकता में सुधार किया। महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियों पर पहल जैसी पहलों ने सेमीकंडक्टर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और क्वांटम कंप्यूटिंग जैसी महत्वपूर्ण तकनीकों में सहयोग को मज़बूत

किया है। भारत और माइक्रोन टेक्नोलॉजी ने 2.75 बिलियन डॉलर का सेमीकंडक्टर प्लांट बनाने के लिए मिलकर काम किया, जो आपूर्ति श्रृंखला के लचीलेपन को बढ़ाएगा। अमेरिकी हाइड्रोकार्बन के एक महत्वपूर्ण आयातक के रूप में, भारत हरित ऊर्जा स्रोतों पर स्विच करने में सहायता करता है। तेल आयात के मामले में, संयुक्त राज्य अमेरिका 2024 में 413.61 मिलियन डॉलर के साथ पांचवें स्थान पर रहा। लचीली आपूर्ति श्रृंखलाएँ, विशेष रूप से आवश्यक वस्तुओं के लिए, चीन पर अपनी निर्भरता कम करने के दोनों देशों के प्रयासों का लक्ष्य हैं। भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका क्वाड राष्ट्रों का हिस्सा हैं। अमेरिका और भारत के बीच व्यापार वार्ता में मुख्य बाधा टैरिफ विवाद है। भारत द्वारा अमेरिकी वस्तुओं, विशेष रूप से कृषि और तकनीकी क्षेत्रों पर उच्च टैरिफ लगाए जाने से व्यापार संतुलन प्रभावित होता है और वार्ता अक्सर बाधित होती है।

मादक पेय पदार्थों पर भारत द्वारा लगाए गए 150 प्रतिशत टैरिफ ने अमेरिकी निर्यातकों की बाजारों तक पहुँच को प्रतिबंधित करने के लिए अमेरिका की आलोचना की है। भारत में जेनेरिक दवा उद्योग सुलभ दवा की गारंटी के लिए अधिक संतुलित रणनीति का पक्षधर है, जबकि अमेरिका मज़बूत बौद्धिक संपदा सुरक्षा चाहता है। बौद्धिक संपदा सुरक्षा के बारे में चिंताओं के कारण अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि ने भारत को अपनी 'प्राथमिकता निगरानी सूची' में रखा। ई-कॉमर्स विनियमों और प्रस्तावित डेटा स्थानीयकरण कानूनों पर भारत की अलग-अलग स्थिति अमेरिकी हितों के विपरीत है। गूगल और अमेज़न जैसे अमेरिकी निगमों द्वारा इस बारे में चिंता व्यक्त की गई थी कि भारत का व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेयक सीमा पार डेटा प्रवाह को कैसे सीमित करेगा। अमेरिका और भारत के बीच 45 बिलियन का व्यापार घाटा बाज़ार पहुँच बढ़ाने और टैरिफ कम करने के लिए अमेरिकी दबाव को प्रेरित करता है। संयुक्त राज्य अमेरिका ने घुटने के प्रत्यारोपण और स्टेंट जैसे चिकित्सा उपकरणों पर कम टैरिफ का अनुरोध करके व्यापार असंतुलन को कम करने की मांग की। भारत के फाइटोसैनिटरी नियम जो अमेरिकी कृषि उत्पादों को प्रतिबंधित करते हैं, इस क्षेत्र में द्विपक्षीय व्यापार के विस्तार में बाधा डालते हैं। चूंकि व्यापार वार्ता ने रक्त भोजन युक्त पशु आहार के मुद्दे को हल नहीं किया है, इसलिए भारत ने अमेरिकी डेयरी आयात को प्रतिबंधित कर दिया है।

एलएनजी और नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्रों में सहयोग अमेरिका की एक प्रमुख उत्पादक के रूप में स्थिति और भारत की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं के कारण संभव हुआ है। उदाहरण के लिए, इस तरह की साझेदारी भारत को ऊर्जा मिश्रण में प्राकृतिक गैस के अनुपात को मौजूदा 6 प्रतिशत से बढ़ाकर कुल प्राथमिक ऊर्जा मिश्रण का 15 प्रतिशत करने के अपने लक्ष्य तक पहुँचने में मदद करेगी। लाभकारी शर्तों पर रक्षा हार्डवेयर का सह-उत्पादन रणनीतिक सम्बंधों को मज़बूत करते हुए भारत की अन्य देशों पर निर्भरता को कम कर सकता है। हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड और जनरल इलेक्ट्रिक ने भारत में लड़ाकू जेट इंजन के संयुक्त निर्माण के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, क्वांटम कंप्यूटिंग और अंतरिक्ष अन्वेषण जैसी महत्वपूर्ण तकनीकों में घनिष्ठ सम्बंधों द्वारा सहयोगी नवाचार के अवसर प्रदान किए जाते हैं। सहकारी अंतरिक्ष अन्वेषण और चंद्र मिशन के लिए आर्टेमिस समझौते में भारत को भागीदार के रूप में स्वीकार किया गया था। घरेलू उत्पादन बढ़ाने के भारत के प्रयास अमेरिका की 'चीन+1' नीति के पूरक हैं, जो मज़बूत आपूर्ति श्रृंखलाओं में साझा उद्देश्यों को बढ़ावा देते हैं। उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन योजना के माध्यम से भारत में उत्पादन बढ़ाकर, एप्पल और सैमसंग ने चीनी कारखानों पर अपनी निर्भरता कम कर दी। एक ऐसा समझौता जो अधिक व्यापक है, उसे सीमित व्यापार समझौते द्वारा सुगम बनाया जा सकता है जो बाज़ार पहुँच में सुधार और टैरिफ विवादों को निपटाने पर केंद्रित है।

भारत और अमेरिका ने कई औद्योगिक और कृषि उत्पादों पर टैरिफ कम करने पर सहमति व्यक्त की, जो एक व्यापक समझौते की संभावना का संकेत देता है। व्यापार असंतुलन को हल करके विश्व स्थिरता की नींव एक मज़बूत भारत-अमेरिका गठबंधन हो सकता है।

विभिन्न संस्कृतियों को एक करता दिवस

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

अदिति सिंह भदौरिया
लेखक स्तंभकार हैं।

मातृभाषा किसी भी व्यक्ति को अपने से पहचान कराने वाला पहला संकेत होती है। उसे इस भाषा को सीखने के लिए किसी विशेष कक्षा या किसी विशेष ट्यूशन की ज़रूरत नहीं पड़ती। कभी हमने सोचा है कि ऐसा क्यों होता है? यह हमारे भीतर की भावनाएं है जो शब्दों का रूप लेकर हमें हमसे ही मिलाती है। मातृभाषा हमारा वह आस्तित्व है जो हमें अपने चारों तरफ के वातावरण को निखारने में भी सहायता करता है। जिस प्रकार जन्म लेते ही बच्चे को मां के दूध के महत्व का पता रहता है, ठीक वैसे ही हमारे शब्दों को हमारी भाषा के महत्व का ज्ञान रहता है। हम जन्म स्थान की भाषा से ही अपना परिचय देते है।

जीवन में मातृभाषा के महत्व को बताते हुए भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने लिखा है, 'निज भाषा उन्नति अहै ,सब उन्नति को मूल बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटन न हिय के सूल' अर्थात् मातृभाषा के बिना किसी भी प्रकार की उन्नति संभव नहीं है।

अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाने का विचार बंगलादेश की पहल थी। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2002 के अपने प्रस्ताव में इस दिवस की घोषणा का स्वागत किया। सोचने की बात है कि हमें क्यों मातृभाषा के लिए किसी एक विशेष दिन की प्रतीक्षा करनी पड़ी। जब से हम प्रगति की ओर कदम बढ़ा रहे है। तब से ही हम अपनी जड़ों से किसी ना किसी रूप में टूटते जा रहे है। मातृभाषा हमारी वो जड़े है, जिनसे जुड़ने के लिए हमें विशेष दिन की प्रतीक्षा करनी पड़ रही है। यह चिंता का विषय है, लेकिन अगर इसका दूसरा पहलू देखें तब हमें यह सोचकर सुकून मिलेगा कि चाहे आज हम अपनी ही भाषा को सम्मान दिलाने के लिए एक दिन पर निर्भर है पर क्या पता आने वाले कल में हमारी मातृभाषा ही हमारी पहचान बनें।

अन्तर्राष्ट्रीय स्केल पर इस दिवस को मनाने का प्रमुख कारण यह भी है कि हम विभिन्न भाषाओं और विभिन्न संस्कृतियों को न सिर्फ समझ पाए, बल्कि इनके भीतर छिपे ज्ञान के अथाह सागर को भी महसूस कर पाए। भारत में इस दिन का विशेष महत्व होना चाहिए। क्योंकि भारत अपने भीतर विभिन्न संस्कृतियों को समेटे हुए है। ऐसे में जब हम अपने ही देश की विभिन्न भाषाओं को नकार कर विदेशों की भाषा से अपनी पहचान बनाने की जदोजहद में लगे रहेंगे तो उन्नति तो सिर्फ काम में होगी, संस्कारों में हम उतना ही पिछड़ते जाएंगे। विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों एवं भाषाओं को लेकर जो हमारे भीतर एक खिंचाव सा आ रहा है, वह आजकल अपनी चरम सीमा पर है। हम अपने अतिरिक्त ना तो किसी अन्य के धर्म को स्वीकार कर रहे है और ना ही किसी ओर की भाषा को भीतर से स्वीकार कर पा रहे है। यह सिर्फ एक देश या एक शहर में घटित होने वाली घटना नहीं है, बल्कि विश्व में इस प्रकार का आक्रोश देखने को मिल रहा है। ऐसे में मातृभाषा के प्रति जागरूकता लाने से न केवल हमारे भीतर अपने गर्वपूर्ण इतिहास के प्रति सजगता दिखेगी। इसके साथ-साथ हम दूसरों के भी संस्कृति को पहचाने में सफल हो सकेंगे। यह दिन हमारे लिए एक बाँध का काम कर रहा है। जिस पर चलकर हम इंसान से इंसानियत की तरफ कदम बढ़ा सकें।

अपनी आने वाली पीढ़ी को एक ऐसा युग दे सकें, जिसमें अपनी बोली अपनी पहचान होने के साथ-साथ हर बोली और हर संस्कृति की न सिर्फ हमें पहचान हो, साथ ही उनके प्रति संवेदनशीलता भी हो। मातृभाषा दिवस मानव से मानवता की तरफ बढ़ाए जाने वाला महत्वपूर्ण कदम है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

डॉ. महेन्द्र अग्रवाल
लेखक व्यंग्यकार हैं।

धूर्तता का रिफ्रेशर कोर्स करने के छह महीने बाद राजनीति

चतुरीलाल राजनीति में नए आए थे मगर धूर्तता का रिफ्रेशर कोर्स करने के छह महीने बाद। इसलिए स्थानीय राजनीति में उनकी अलग ही चमक़ थी अलग ही पकड़ थी अलग ही महत्व था। उनसे जो भी बंदा मिलता था उनका मुरीद होकर रह जाता।उनके व्यक्तित्व और कृतित्व की पूरी जानकारी मिलने के बाद उनकी योग्यता का लोहा प्रदेश नेतृत्व भी मानने लगा था। वह जो कहते थे उसे करके भी बताते थे। इसलिए सबकी नजरों में भरोसे के लायक थे। उन पर सबको भरोसा था भले ही वह किसी पर भरोसा न करते हों। वह सबको विश्वसनीय लगते थे और उनको सब अविश्वसनीय। नैतिक अनैतिक वैधानिक अवैधानिक मामलों में वह समरस थे। जैसी की तैसी धर दीनी चदरिया गाते हुए वह कब क्या कर जाते थे इसकी किसी को कानों कान खबर भी नहीं लगती थी। राम की माया राम ही जाने कहने में उन्होंने कभी संकोच नहीं किया। वो तो बता और जता भी देते थे कि इस उक्ति में वे भी किसी राम से कम प्रतापी नहीं। क्षेत्र में केन्द्र या प्रदेश के किसी बड़े नेता की सभा होनी हो तो यह महती दायित्व उन्हें ही सौंपा जाता था। उनकी बस एक छोटी मामूली सी शर्त होती थी कि वह मंच पर रहेंगे और आने वाले नेताजी की सुराहीदार गर्दन के लिए सबसे बड़ा हार भी वही बनवाकर लायेंगे और कोई नहीं। उस बड़े हार में उनके साथ होंगे ये कहना जरूरी नहीं है। सभा सारी व्यवस्थायें मतलब खर्च की सारी व्यवस्थायें वही बनाते थे इसलिए कोई विरोध भी नहीं करता था।करना भी चाहे तो पार्टी फॉरम में कर नहीं पाता था। वह अपनी मन की करते थे। बाद में मीडिया में वही फोटो आता था जिसमें वह अपने बड़े हार और बड़े नेताजी के साथ होते थे। इनकी सबसे बड़ी खूबी यही थी कि सभा के बाद वह दल में किसी को किसी भी खर्चे के बिल नहीं देते थे। न पार्टी फॉरम में इसकी चर्चा करते थे और न पब्लिक में इस मुददे को उठाते थे। यह वो राज था जो सदा से इनके अपने इकलौते दिल में दफन रहता था। जैसे मुर्दे के श्मसान पहुंचने के बाद कफन का पता नहीं पड़ता वैसे ही उनके किसी हिसाब का।

इस कारण अपने क्षेत्र और पार्टी दोनों में उनकी बड़ी साख थी। वो इस लायक भी थे और अपने क्षेत्र के केशरी थे।न खाता न बही जो वो कहें वो सही। मांगना किसी से था नहीं और न कभी मांगा पर जो साख पार्टी में थी वैसी पब्लिक में बची न रह सकी। संगठन में तो हरी झंडी मिल गई पर चुनावों के समय कराये गये गोपनीय सर्वे में सब गुड़ गोबर हो गया। पीठ पीछे बोलने वालों को काहे की शर्म। पब्लिक में अपरिचितों ने तो ठीक पार्टी में परिचितों ने भी अगली पिछली सब भुना ली। परिणाम ये हुआ कि नए क्राइट एरिये में ऊपर से उनका टिकिट कट गया।अब जिस पार्टी से चुनाव ही न लड़ पायें उसमें रहकर भी क्या करना? दो चार महीने से लग भी रहा था कि इस बार पार्टी की सरकार नहीं बन पायेगी। अब तात्कालिक परिस्थितियों में दल बदलना हर लिहाज से उचित था तो उन्होंने भी उचित कार्य करने में तनिक भी देर न की। मत चूके चौहान वाली बात थी चौहान ने भी तीर निशाने पर लगा दिया। सम्मान सहित दूसरे दिन से दूसरे दल में।

अब नए दल में आ गये तो उसमें भी अपनी पहचान बनानी थी, काम के आदमी हैं ये बताकर अपनी उपयोगिता सिद्ध करनी थी। अवसर की तलाश में थे। वहां आम सभा के संयोजक कई पुराने खिलाड़ी थे जो अपने संसाधनों पर किसी का हाथ तो क्या किसी पराये की दृष्टि भी नहीं पड़ने देना चाहते थे। संयोग से उनकी पुरानी पार्टी के एक पुराने नेता की वहां सभा आयोजित होने की खबर लीक हुई तो उन्होंने उसे ही लपक लिया।खबर मिलते ही पत्रकार वार्ता बुला ली । पिछले सारे बिल सामने रख दिये कि मैंने कब कितनी बार इन नेताजी की आम सभा कराई और कितने पैसे खर्च किये किन्तु मुझे आज तक किसी ने फूटी कौडी भी नहीं दी।अपनी नई पार्टी के शीर्ष नेताओं की नज़र में आने के साथ मीडिया की सुर्खी में आ गये।

प्रदेश नेतृत्व ने खुद बुलाकर पीठ ठोकी और लगे हाथ अगले चुनाव में टिकिट दिलाने का झांसा भी दे डाला। जैसी कि दिये के जमाने से उनकी आदत थी सभी दियों में तेल देते रहने की। वे जानते थे कि उनका कार्यकाल तीन साल का है अगले चुनाव तक तो नया पट्ठा आ जायेगा। अपना बनाने बोलने में सबको खुश रखने में क्या जाता है? पर संगठन में जिम्मेदारी देने से बचे रहे कि कोई अनर्गल आरोप न लगाये।

वे अच्छी तरह जानते थे कि राजनीति का मतलब बिना किसी हिचक या संकोच के राज करो ही है। इसका संबंध केवल उस नीति से है जो अपना राज बचाये रखे या राजकाज दिलाने में मदद करे। पर करते भी क्या, बस कर्म करने के बाद भी फल के लिए भाग्य के भरोसे बने रहे।कभी तो कोई लहर आयेगी। देखते हैं कि उनकी किस्मत कब चेतती है।

कल्पवास

प्रमोद दीक्षित मलय

लेखक शिक्षक एवं स्तम्भकार हैं।

विदा तीर्थराज प्रयाग ! फिर मिलेंगे अगले साल

15 फरवरी, 2025। फाल्गुन कृष्ण पक्ष तृतीया, पिंगल नाम विक्रम संवत्सर 2081। अपना कल्पवास पूर्ण कर घर वापसी के लिए प्रस्थान का दिन। मां गंगा की वात्सल्य धारा में सतत अवगाहन के बिछोह-विराम का दिन और प्रयागराज की छांव से अलग होने का दिन। गंगातट की रेती पर लघु भारत के दर्शन से विलग होने का दिन। तीर्थराज प्रयागराज में कल्पवास का एक मास कब बीत गया, पता ही नहीं चला। समय की पीठ पर जैसे पंख उग आए हों, उड़ता चला गया। छोड़ गया तो बस मन के भोजपत्र पर अंकित मधुर स्मृतियां, हृदय में गंगाजल के सिंचन से उगे नेह-प्रेम के कोमल अंकुर, तीर्थ पुरोहित परिवार की आत्मीयता की उर्वर नम भूमि में उपजा मृदुल सम्बंधों का छतनार कदम्ब कल्पतरु। पुष्ट हुआ है संकल्प से सिद्धि का मानस, विस्तृत हुआ है भक्ति के आधार मन का आकाश। उज्वलतर हुआ है आस्था और श्रद्धा के प्रकाश का फैलाव। गहरा हुआ मानवीय सम्बंधों की आत्मीयता, मधुरता एवं विश्वास का शीतल कूप। मस्तिष्क में प्रकट हुआ वसुधैव कुटुम्बकम् का सम्यक् अर्थबोध। समाज व्यवहार में समावेशित होने लगे सहकार एवं समन्वय, सहानुभूति एवं समानुभूति, सह-अस्तित्व, सामंजस्य एवं सामूहिकता, संवेदना, शांति एवं सख्य भाव के सहज सनेही सूत्र। अधिक दैदीप्यमान हुआ सनातन संस्कृति का गौरव किरीट।

अपना सभी सामान यथा - गद्दे-रजाई, कम्बल, भोजन बनाने के बर्तन, गैस चूल्हा और सिलेंडर, अपनी पुस्तकें-लेखनी और डायरी, शेष खाद्य सामग्री आदि बोरियों एवं गत्तों में भरकर बांधा जा चुका है, अच्छी तरह टेप भी लगा दिया है। कुर्सी पर बैठे हुए बीते एक महीने में कल्पवास अवधि में मां गंगा में लगाई डुबकियों से उपजी लहरों को उर-सिंधु में सहेज रहा हूं। गुजर गये समय की पुस्तक के पृष्ठ पलट रहा हूं जिनमें कल्पवास के मनोहारी चित्र अंकित हैं। कुर्सी से नीचे उतर चमकती रेणुका को दोनों मुट्ठियों में उठा हथेलियों को जोड़ फैला दिया हूं, रेत के फलक पर चमकीलें कणों में स्मृतियों का इंद्रधनुष उगने लगा है।

जीवन में यह पहला अवसर था कि हम पति-पत्नी एक साथ एक महीने के लिए आध्यात्मिक साधना के लिए घर से बाहर निकले हों। कल्पवास करने के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं थी। नवम्बर की एक शाम अचानक मन में विचार-भाव का अंकुरण हुआ कि क्यों न कल्पवास कर लें। विचार-सरिता की धारा पत्नी वंदना जी की ओर मोड़ दी तो वह सहर्ष साथ चलने को तैयार हो इस कल्पवास तप यज्ञ हेतु समिधा-सीधा जुटाने में जुट गईं। पर कहां रहेंगे, ज्ञात नहीं था तो एक दिन सुबह निकल लिए प्रयागराज। संगम स्नान कर अपने गांव बल्लान के पंडा माधौप्रसाद पंडा, लालटून का झंडा के वंशज आशीष पंडा जी से सम्पर्क किया और एक टेंट एवं शौचालय का प्रबंध हो गया। हृदय में खुशियों का उजाला चमकने लगा।

समय आने पर सभी आवश्यक वस्तुओं का प्रबंध कर हम दोनों ने एक लोडर में सामान लाद 11 जनवरी की दुपहर कल्पवास हेतु प्रस्थान किया। प्रयागराज पहुंचते 4 बजे गया। जगत् को जीवन देने वाला सूरज अपनी किरणें समेटने लगा। नैनी से होते नये पुल पर वाहनों की लम्बी कतारें मानों हमारे धैर्य की परीक्षा लेने को व्यग्र थीं। आखिर दो घंटे जाम से जूझते हम नागवासुकी मंदिर से होते हुए नेत्र कुम्भ का पांडाल पार कर तिरुपति बाला जी मंदिर को प्रणाम कर दिव्य प्रेम मिशन के पांडाल के सामने की सड़क के मुहाने पर तीन लोटों के एक निशान को देखते अपने टेंट पहुंच सारा सामान उतार हाथ-मुंह धो भोजन कर सो गये। अगली सुबह जगकर बाहर दुकान से चाय-पकौड़े लिए और फिर सामान व्यवस्थित करने में लग गये। हम दो व्यक्तियों के लिए यह एपी नामक तम्बू बहुत बड़ा था। कहां पर भोजन पकाने हेतु चूल्हा रखें, किधर पूजा घर और कहां पर बर्तन धोने की जगह बनायें तथा किधर शयन कक्ष हो, यह सोचने और तय करने में बहुत समय लग गया। सबसे पहले रेत के ऊपर पुआल बिछाया गया, फिर बरसाती। दो घंटे की मेहनत का सुफल एक व्यवस्थित आवास के रूप में सामने था।

पौष पूर्णिमा 13 जनवरी से कल्पवास का मानसिक संकल्प ले साधनारत हुए। हमारे बाड़े में 25 से अधिक तम्बू थे, अधिकांश में कल्पवासियों का डेरा था। शेष प्रतीक्षारत थे 29 जनवरी मौनी अमावस्या में आने वाले श्रद्धालुओं के स्वागत अभिनन्दन के लिए। अमावस्या के एक दिन पहले से ही तीर्थयात्री आने लगे। तम्बू आबाद होने लगे और चहल-पहल हल्ला-गुल्ला, हंसी-ठहाकों से परिसर गूंजने लगा तो संध्या वंदन, भजन आरती के स्वर ढोलक-मंजीरा एवं एकतारा की संगत में वातावरण में जीवन रस घोलने लगे।

एक महीने की यह आध्यात्मिक यात्रा इतनी सहज, संतुष्ट, आनंदमय एवं आत्मीयतापूर्ण रही कि आज मां गंगा स्नान से वापस आते समय हम पति-पत्नी रो पड़े। पहले भी कितनी गंगा स्नान किया होगा, किंतु केवल एक पवित्र नदी के रूप में। पर आज महसूस हुआ कि हम मां की गोद में थे। वही हमें नहला रही थी। गंगा नदी नहीं है, साक्षात् जीवनदायिनी मां है, वात्सल्यमयी मां। यहां से जाते समय कंठ मां गंगा से प्राप्त अथाह आशीर्वाद तथा तीर्थ पुरोहित पंडा जी के परिवार से मिले अपनेपन की आर्द्रता से अवरुद्ध हैं, आभार प्रकटन को शब्द मुख से बाहर नहीं आ पा रहे। पलकें नयनों से बहने को आतुर चक्षुजल धार को रोकने में असमर्थ हो रही हैं। विदा की यह वेला एक ओर अपने घर पहुंचने की खुशी का नीर है तो मां गंगा और तीर्थ पुरोहित परिवार से दूर होने की व्यथा पीर भी। एक-एक पल युग सा लग रहा है। लगता है काल पुरुष ठहर कर दो अपरिचित परिवार के मिलन पश्चात् विछोह तथा ममतामयी मां गंगा से पुत्र के अलगाव का कारुणिक-मार्मिक दृश्य अपनी आंखों में हमेशा के लिए कैद कर लेना चाहता हो जैसा कि कभी त्रेतायुग में चित्रकूट में मां मंदाकिनी तट पर श्रीराम-भरत मिलाप के समय किया होगा।

वाहन में पूरा सामान लादा जा चुका है, हम भी बैठ गये हैं। वाहन रेत पर बिछी चकर प्लेटों के पथ पर सरकने लगा है। इस पावन भूमि के कण-कण को श्रद्धा पूर्वक प्रणाम कर विदा ली। आंखों से अविरल वारिधारा बह निकली मानो तीर्थ पुरोहित का खाया गया नमक नेत्रों से नेहजल बन वापस उनके पास पहुंच हमें उऋण करना चाहता हो, किंतु प्रेम-भक्ति में ऋण-उऋण कहां। वाहन में पीछे बैठे हम दोनों देख रहे हैं कि तीर्थ पुरोहित का परिवार भी अपनी आंखें पोंछ रहा है, पर अश्रु हैं कि रोके रुक नहीं रहे। बेटी तिथि मां के कंधे पर सिर रखे आंसू पोंछ रही है। पंडा जी श्याम भैया के अस्फुट शब्द कर्ण गह्वर से टकरा रहे हैं, 'ऐसे तीर्थयात्री बड़े भाग्यशाली पंडा को मिलते हैं। ईश्वर इनको हमेशा खुश रखें।' ये शब्द मानो हमारे कल्पवास का प्रमाण-पत्र बन गये और हमने पारितोषिक समझ हृदयस्थ कर लिया है। अम्बर के पश्चिमांचल में सूरज अपने घर जा रहे हैं और हम भी; एक नवजीवन, नवल ऊर्जा, नव विश्वास, नवीन चेतना के साथ सम्पूर्ण होकर। गोधूलि वेला पश्चात् अंतरिक्ष के नीले वितान में कृष्ण पक्ष की तृतीया का चंद्र मेरी कन्या राशि में संचरण कर रहा है। विदा तीर्थराज प्रयाग! अगले साल माघ मेले में फिर मिलेंगे। हमें बिसराना नहीं। तुमसे मिलने अवश्य आएंगे क्योंकि तुमसे मिलना स्वयं से मिलना है, पिंड का ब्रह्माण्ड से मिलना है।

प्रकृति और हम

प्रभुनाथ शुक्ल

लेखक पत्रकार हैं।

आओ थोड़ा हम थोड़ा तुम बसंत हो जाएं

खेतों में फसलों की रंगत बदल गई है। सरसों के पीले फूल खत्म हो गए हैं और वह फलियों से गदराई है। मटर और जौ की बालियां सुनहली पड़ने लगी हैं। जवान ठंड अब बुढ़ी हो गई है। हल्की पछुवा की गलन गुनगुनी धूप थोड़ा तीखी हो गई है। घास पर पड़ी मोतियों सरीखी ओस की बूँदें सूर्य की किरणों से जल्द सिमटने लगी हैं। प्रकृति के इस बदलाव के साथ फागुन ने आहिस्ता- आहिस्ता क़दम बढ़ा दिया है। टेंशू, गेंदा और गुलाब फागुन की मस्ती में खिलखिला रहे हैं। अमराइयों में आम में लगे बौरों की मादकता अजीब गंध फैला रहीं है।

भौंरे कलियों का रसपान कर वसंत के गीत गुनगुना रहे हैं। पेड़ों से पत्ते रिश्ते तोड़ वसंत के स्वागत में धरती पर बिछ जाने को आतुर हैं। प्रकृति और उसका ऐहसास फागुन के होने की दस्तक देता है। लेकिन इंसान बिल्कुल बदल चुका है। वह फागुन को जीना नहीं चाहता है। वह प्रकृति से साहश्चर्य नहीं रखना चाहता है। वह उसे भी जीतना चाहता है। खुद नियंता बनाना चाहता है। शायद यहीं उसकी भूल है। फागुन में भौजाई की ठिठोली और मसखरी जाने कहां खो गई। फागुन के गीतों पर ढोल- मंजीरे की थाप सुनाई नहीं देती है। पूर्वांचल में फागुन के गीत को फगुवा के नाम से पुकारा जाता है। लेकिन अब यह गीत और उसे गाने वाले लोग गायब हैं। अश्लील और गंदे भोजपुरिया गीतों का राज है। फाग गीत प्रकृति से जुड़े होते थे। लेकिन आजकल के गानों में सिर्फ अश्लीलता है। सभ्य समाज में ऐसे गीत सुनने लायक भी नहीं है। समय के साथ सब कुछ बदल रहा है। जबकि यह बदलाव तथ्य और अर्थहीन है। फागुन प्रकृति का रंगोंत्सव है। फागुन में प्रकृति बदल जाती है। वह मलंग हो जाती है। उसमें अजीब मादकता आ जाती है। फागुन और बसंत के जरिए प्रकृति हमें संदेश देती है कि जिस प्रकार मैं विविधताओं से भरी हूं उसी तरह मानव जीवन में भी रंगों की विविधताएं हैं। सुख-दुःख, हर्ष, विस्माद, उल्लास, उत्सव भी जीवन के अपने रंग हैं। इसको खुल कर जीना चाहिए। फागुन जैसा जीना चाहिए। प्रकृति हमें संतुलन ही नहीं संतुष्टि भी सिखाती है। लेकिन हम उसके संदेश को पढ़ नहीं पाते हैं। जब उसे पढ़ने की कोशिश करते हैं तो फागुन यानी बसंत गुजर गया होता है और हम पतझड़ को लेकर फिर परेशान हो जाते हैं। क्योंकि हम सिर्फ बसंत को जीना चाहते हैं पतझड़ को नहीं।

माघ- फागुन के मौसम में चरखी से निकले गन्ना के रस में दही मिला सीखरन तैयार होता था। फ़िर मटर की सलोनी के साथ उसे पीने का आनंद और स्वाद ही अलग था। अब गाँवों से गन्ने की खेती गायब हो चली है। कड़ाहे गुड़ और खांड की सोंधी गंध नाक को तृप्त नहीं करती। वह वक्त भी था जब पकती खांड में हम आलू डालने जाते तो दादा की खूब डाट मिलती। लेकिन सब कुछ बदल गया है। अब गांव कंकरीट के जंगल में तब्दील हो चुके हैं। धनाढ्यों ने कई मंजिला इमारतें खड़ी कर शहरी अभिजात संस्कृति का आगाज किया है। घरों में टिमटिमाती ढेबरी की जगह एलीडी और इनवर्टर की प्रकाश ने ले लिया है। कभी-कभी मिट्टी का तेल यानी केरोसिन न मिलने से दादी और अम्मा कडुवा तेल का दीपक जलाती थी। लेकिन अब यह बातें कहानियां हो गई हैं।

प्रकृति में अल्हड़ फागुन जीवंत है लेकिन बदली परम्पराओं और हमारी सोच में वह बूढ़ा हो चला है। फागुन में रास है न रंग। बस होली के नाम पर औपचारिकता दिखती है। अब गालों पर गुलाल मलने सिर्फ रस्म निभाई जाती है जबकि दिल नई मिलते। गाँवों में फागुन वाली भौजाई गायब है। जब कच्चे मकान होते थे तो भौजाई और घर की औरतें माटी- गोबर लगाती थी। पूर्वांचल में गांव की भाषा में इसे गोबरी कहते हैं। गोबरी लगाते वक्त अगर कोई देवर उधर से गुजरता था तो भौजाई दौड़ा कर मुंह और कपड़े में गोबरी लगा फागुन और होली के हुडदंग का आगाज करती थी। फ़िर देवर भी भौजाई को छेड़ने के मौके तलाशते थे। टोलियों के साथ होली मनती थी। वक्त के साथ गांव की होली भी पूरी तरह बदल गई है। होली में आज कल हुड़दंग गायब है। होली के उस हुड़दंग में एक उल्लास और अपनापन था लेकिन सब कुछ सिमटता जा रहा है। अब तो रंग उत्सव का त्योहार होली दिखावटी और बनावटी हो गया है।

वसंत लगते ही रंगत बदल जाती थी। फागुन में होने वाली शादी में दूल्हा और बाराती रंगो में नहा उठते थे। होली के दिन गुड़ में भांग मिलाकर महजूम बनाए जाते थे। भांग मिश्रित ठंढई बनती थी। बचपन में हम लोग उसे पीकर होली के हुडदंग में शामिल हो जाते। यह सब वसंत लगते ही शुरु हो जाता था। लेकिन अब न वह देवर हैं न भौजाई। वसंत पंचमी के दिन से होलिका संग्रह होने लगता। बचपन में युवाओं में होलिका को लेकर खास उत्साह होता। जिस दिन होलिका दहन होता उस दिन दादी ऊबटन और तेल की मालिश कर उसकी लिझी यानी मैल होलिका में डलवाती थी। लेकिन अब इस तरह के रिवाज़ गायब हैं। होलिका दहन अब औपचारिक हो चला है। त्यौहारों की मिठास ख़त्म हो चली है। आपसी प्रेम और सौहार्द गायब है। फागुन एक सोच है। वह जिंदगी को हसीन और रंगीन बनाने का संदेश है। वह उम्मीदों की नई कोंपल है। लेकिन वक्त इतनी तेजी से बदला की फागुन और उसकी ठिठोली खुद को तलाश रहीं है।

अरे नेताजी मेरे पास दिमाग है अक्ल नहीं

वक्रोक्ति

प्रकाश हेमावत

लेखक व्यंग्यकार हैं।

समाज में, शहर में, मेरा व्यवहार, परिचय, सामाजिक वातावरण में सामाजिक स्तर को देखते हुए राजनैतिक दृष्टि से धार्मिक माहौल में घुलामिला रहता हूं और कहीं कहीं नेता, अतिथि, मुख्य अतिथि, विशेष अतिथि, कार्यक्रम के अध्यक्ष पद से लेकर कार्यकर्ता के रूप में रहते हुए कई प्रकार के दायित्व, अधिकार, कर्तव्य के रहते मुझे शादियों की सीजन के अलावा जनम, मरण कार्यक्रम में जाना पड़ता रहता है। कभी-कभी तो इसी स्थिति हो जाती है कि मुझे तीन-तीन चार-चार जगह भोजन वाले कार्यक्रमों में जाना पड़ता है। इसलिए मेरे सामने समस्या खड़ी हो जाती है। इस समस्या से कई बार जुझना पड़ता है और परेशान होता रहता हूं कई बार मुझे उनकी नाराजगी का शिकार होना पड़ता है और इस बात का हल निकाल कर नहीं आता है?

मेरी इस भयानक परेशानी को देखते हुए शादी लाल घर जोड़ें मुझे तुरंत एक सुझाव बताया या फिर यूं कहूं तो उसने मेरी इस कठिन से कठिन समस्या का समाधान करवा दिया। जैसे चुनाव के समय वादों घोषणाओं की लेते समय मतदाता को आनंद आता है उतना ही आनंद आज मुझे भी आ रहा है इस योजना को सुनकर।

मैंने कहा, शादी लाल जी तुरंत अपने विचार व्यक्त कीजिए आपके विचारों का स्वागत, वंदन, अभिनंदन हैं।

अरे ठहरो ठहरो 'पार्थ' इतनी क्या जल्दी है। कुछ 'चाय पानी' हो जाए। मैं शादीलाल घर जोड़ें आपकी समस्या का समाधान कर रहा हूं क्योंकि, आप तो बहुत बड़े नेता हैं और मैं आपके सामने छोटा सा कार्यकर्ता हूं। ऐसी समस्या का समाधान तो एक कार्यकर्ता ही कर सकता है।

चलिए आप पहले हमें 'चाय पानी' पीलवाइए तब तक हम आपकी समस्या का समाधान करते हैं तो सुनिए तुरंत मेरे दिमाग में युक्ति आई और मुक्ति की तरह तुरंत अमल में लाया जाएगा। जिस तरह देश में हर एक नेता, मंत्री के प्रतिनिधि किसी न किसी रूप में प्रतिनिधि रहता है। शादीलाल घर जोड़े ने बताया देखिए नेता जी 'दयाराम' जिस तरह देश में सांसद प्रतिनिधि, विधायक प्रतिनिधि, पार्षद प्रतिनिधी, पार्षद पति, सरपंच प्रतिनिधि, सरपंच पति जैसे विभिन्न प्रकार के प्रतिनिधियों के रूप में चारों ओर प्रतिनिधि ही प्रतिनिधि मक्खियों की तरह नजर आ रहे हैं। वे सभी प्रकार के कार्य करने में निपुर्ण होते हैं। इन सारी बातों का अध्ययन और चिंतन मनन करने के बाद में इस नतीजे पर निकला कि क्यों ना आप भी जनम, मरण और परण में होने वाले अनेक प्रकार के कार्यक्रमों में जाने के लिए एक प्रतिनिधि नियुक्त कर दो। वह आपकी तरफ से आपकी उपस्थिति हर जगह दर्ज करवा देगा। अब आप निश्चित रहिए आपकी समस्या का समाधान हो जाएगा।

अरे वाह वाह क्या बात है! शादीलाल घर जोड़े तुमने तो कई लोगों के घर जोड़े आज मेरी भी समस्या का समाधान करके तुमने मेरे लिए भी मेरे दिल भी तेरे दिल से मिलकर मुझे दिल जोड़े बना दिया। अब मैं भी आपनी और से मेरे प्रतिनिधि के रूप उपस्थिति दर्ज कराने के लिए भंडारा प्रतिनिधि, शादी में भोजन प्रतिनिधि, विषेश, मुख्य, अतिथि प्रतिनिधि, शवयात्रा में शामिल करने वाले प्रतिनिधि नियुक्त कर दूंगा। सभी कार्यक्रम में मेरे नाम से वह प्रतिनिधि बनाकर जाएंगे तो वहां मेरी उपस्थिति दर्ज हो जाएगी और मेरी भागदौड़ भरी समस्या का समाधान हो जाएगा। इसलिए मैं अपना प्रतिनिधि बनाकर उन्हें वहां भेज दुंगा।

अरे नेताजी सही पुछो तो मेरे पास दिमाग़ है अक्ल नहीं है समझ गए ना मैं क्या कहना चाहता हूं।

मुद्दा

राजेंद्र जोशी

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

जनजातीय छात्रावासों में अनियमितताओं का सिलसिला

देश मे आजादी के बाद से ही मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों में अनुसूचित जाति,जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों हेतु आवासीय छात्रावास, आश्रमों की व्यवस्था सरकारी स्तर पर बनाई गई है। साल दर साल इनमे सुविधाओं और साधनों की लगातार वृद्धि होती जा रही है लेकिन विद्यार्थियों के साथ अधीक्षकों और कर्मचारियों का शोषण और लापरवाही बढ़ती जा रही है। साधनों और खाने में कमी इलाज में लापरवाही के बाद अब तो यौन शोषण के मामले सामने आने लगे है। सरकारी स्तर पर मामलो की जांच, दोषियों पर कार्रवाई और पुनः बहाली, इससे अधिक कुछ नहीं। कुछ समय निरीक्षण, सख्ती और फिर से घटनाओं का सिलसिला जारी।

फरवरी 2025 के शुरुआती सप्ताह में बड़वानी जिले के ग्राम पलसूद के कस्तूरबा गांधी बालिका छात्रावास की बालिकाओं के द्वारा छात्रावास अधीक्षिका और बीईओ पर बेड टच और यौन शोषण के आरोप लगाते हुये, पुलिस थाने पर शिकायती आवेदन दिया गया। शिकायत के चलते जयस के द्वारा किये गये विरोध प्रदर्शन के बाद अधीक्षिका के खिलाफ पाक्सो और एट्रोसिटी एक्ट के अंतर्गत मामला दर्ज कर लिया गया है। मामला 2 फरवरी की दरमियानी रात का है।

मामले में छात्राओं का कहना है कि अधीक्षिका के द्वारा उन्हें बुलाया गया। बीईओ को होस्टल दिखाने के दौरान कक्ष में बीईओ ने बेड टच किया और इंदौर साथ चलने का प्रस्ताव दिया। वहीं दूसरी छात्रा ने बताया कि 29 जनवरी को विदाई कार्यक्रम के दौरान अधीक्षिका से साड़ी पहनने में मदद मांगी तो उन्होंने बेड टच करके वीडियो बनाया। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। फरार अधिक्षिका की 10 दिनों बाद गिरफ्तारी हुई।

गौरतलब है कि जनजातीय कार्य विभाग के द्वारा संचालित होने आश्रमों व छात्रावासों की अव्यवस्थाओं की शिकायतें लंबे समय से की जा रही हैं। अभी तक छात्रावासो में फूड पायजनिंग,बीमारी की स्थिति में समय पर इलाज नहीं मिलना, मीनू अनुसार भोजन व नाश्ता नहीं मिलना, सफाई का अभाव सहित अन्य अनियमितताएं देखने व सुनने में आती रही है, लेकिन यह घटना बता रही है, कि भ्रष्टाचार और आर्थिक सम्पन्नता के चलते छात्रावास अधीक्षकों पर किसी का अंकुश नहीं है। हर साल, हर महीने प्रदेश के विभिन्न जिलों से छात्रावासों में अनियमितताओं के मामले सामने आते रहते है।

विगत दो वर्षों के दौरान बड़वानी व धार जिले के छात्रावास आश्रमों के घटनाक्रम को देखना काफी होगा। जुलाई 2023 में एकलव्य आवासीस विद्यालय परिसर बुदी जिला बडवानी में एक छात्रा ने चाकू से हाथ की

नस काट ली थी। इस घटना को सामान्य घटना बताकार टाल दिया गया। इसी एकलव्य आवासीस विद्यालय की छात्राओं ने फरवरी 2024 में अधीक्षक, अतिथि शिक्षक व चतुर्थ श्रैणी कर्मचारियों पर डराने, धमकाने व वीडियो बनाने की शिकायत करने हेतु छात्रावास से जिला मुख्यालय तक पैदल मार्च किया गया था। घटना की जांच उपरान्त 4 कर्मचारियों की सेवा समाप्त कर दी गई, एक को निलम्बित और एक को अन्यत्र अटैच किया गया।

25 मार्च 2024 को इंदौर के तत्कालीन सम्भागायुक्त मालसिंह भायडिया ने बडवानी जिले के बोकराटा के सीनियर बालक छात्रावास का दौरा किया तो वहां कई अनियमितताएं पाई। इस पर छात्रावास अधीक्षक पर कार्रवाई का आदेश दिया गया था लेकिन न तो उस पर कार्रवाई हुई न ही उसे वहां से हटाया गया।

सितम्बर 2024 में धार जिले के डही ब्लाक के ग्राम बडवानिया के बालक छात्रावास में बाढ़ का पानी घुस जाने से 42 बच्चों की जान पर बन आई थी। घटना के समय अधीक्षक नदारद थे। जुलाई 2024 में डही के ग्राम अमलझूलम में बने एकलव्य शासकीय आवासीय विद्यालय में नाश्ते के बाद हुई फूड पायजनिंग में 26 बच्चों की तबियत खराब हो गई। पांच को गम्भीर हालात में बडवानी रैफर किया गया। जुलाई 2024 में ही धार के नजदीक लबरावदा फाटा स्थित एकलव्य आवासीय छात्रावास के छात्र रैली बनाकर कलेक्टर कार्यालय पंहुचे। अधीक्षक पर गुसांग पर मारने के आरोप लगे।

तथ्य यह है कि जनजातीय कार्य विभाग के बालक बालिका छात्रावासों में अधीक्षक बरसों से जमे है, जबकि नियम 3 वर्ष का है। अधिकांश छात्रावासों में अधीक्षक रात्रि में रूकते नहीं हैं। अनियमितता पाये जाने पर हटाये गये अधीक्षक कुछ समय बाद पुनः उसी छात्रावास में पदस्थ हो जाते हैं। अधिकारियों द्वारा छात्रावासों का निरीक्षण भी औपचारिकता मात्र रहता है। डर के मारे छात्र छात्राए अधीक्षक के विरूद्ध बोल नहीं पाते हैं। निरीक्षण के समय ही छात्रावासों की व्यवस्था सुधरती है, उसके बाद वही हाल।

यह कुछ मामले है जो मात्र दो जिलों से सामने आये है। अन्य जिलों की पड़ताल होने पर आंकड़े बढ़ सकते है। जनजातीय कार्य विभाग द्वारा संचालित बालक-बालिका छात्रावासों में प्रदेशभर में आए दिन अनियमितताओं के मामले सामने आते रहते है। जब कोई बड़ी घटना घटती है तब छात्रावासों के निरीक्षण और संचालन की गाइड लाइन बनाई जाती है,लेकिन उसके बाद फिर से ढांक के तीन पात।

संक्षिप्त समाचार

नगद इनाम की घोषणा

विदिशा (निप्र)। पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी ने थाना लटेरी में दर्ज अपराध के फरार आरोपियों की सूचना देने अथवा गिरफ्तारी कराने में मदद करने वाले के लिए एक-एक हजार रूपए नगद इनाम देने की घोषणा की है। थाना लटेरी में दर्ज अपराध प्रकरण क्रमांक 26/2025 के फरार आरोपी बने सिंह पुत्र नारायण सिंह गुर्जर, उम्र 40 साल, धर्म सिंह पुत्र नारायण सिंह गुर्जर उम्र 42 साल, लाल सिंह पुत्र नारायण सिंह गुर्जर उम्र 45, शरमा पुत्र नारायण सिंह गुर्जर उम्र 35 साल निवासीगण ग्राम तिन्सिया थाना लटेरी की सूचना देने अथवा गिरफ्तारी में मदद करने वाले के लिए एक-एक हजार (प्रत्येक पर) रूपए का नगद इनाम घोषित किया गया है। सूचना देने वाला व्यक्ति चाहे तो उसका नाम गोपनीय रखा जाएगा।

मदिरा के अवैध विक्रय व संग्रहण के 15 प्रकरण दर्ज

हरदा (निप्र)। कलेक्टर श्री आदित्य सिंह के निर्देश पर आबकारी विभाग के दल ने गत दिवस मदिरा के अवैध निर्माण, संग्रहण व विक्रय के विरूद्ध कार्यवाही की। जिला आबकारी अधिकारी श्री रीतेश कुमार लाल ने बताया कि आबकारी विभाग के दल हरदा शहर के खेड़ीपुरा, मोहल्ला, टंकी मोहल्ला, पीलियाखाल, ग्राम कमताड़ा, मसनगांव तथा खिरकिया के वार्ड क्रमांक 6, खेड़ा, भीमपुरा, जामुखो, मालपौन, मैदा, उंढाल, रामपुरा, नयापुरा व जोगा में दबिश दी। दबिश के दौरान कुल 51 लीटर हाथ भट्टी महुआ शराब तथा 900 किलोग्राम महुआ लाहन जप्त कर मध्यप्रदेश आबकारी अधिनियम के तहत कुल 15 प्रकरण दर्ज किये। जप्त किये मुद्देमाल का अनुमानित बाजार 100200 रूपये है।

डेम की भूमि पर अतिक्रमण कर बोई फसल को नष्ट कराया गया

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री रौशन कुमार सिंह के द्वारा दिए गए निर्देशो के अनुपालन में अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही राजस्व अधिकारियों के द्वारा अभियान के रूप में क्रियान्वित की जा रही है। सिरोंज के केथन डेम की भूमि लगभग 19 हेक्टेयर पर फसल बोकर अतिक्रमण किया गया था। जिसे सोमवार को राजस्व अधिकारियों के द्वारा विमुक्त कराया गया है।

कलेक्टर आवेदकों से हुए रू-ब-रू , समस्याओं को सुना

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री रौशन कुमार सिंह ने अपने चेम्बर के बाहर आवेदको से रू-ब-रू होकर उनकी समस्याओं को सुना और निराकरण के लिए स्टेनो के माध्यम से संबंधित विभाग को पत्र प्रेषित करने के निर्देश दिए है। कलेक्टर श्री सिंह ने लंबित आवेदनो की समीक्षा बैठक के उपरांत अपने चेम्बर के सामने मौजूद 35 आवेदको से संवाद कर उनकी समस्याओं से अवगत हुए और निराकरण की पहल कराई है।

कुबेरेश्वर धाम ग्राम चितावलिया हेमा में आवश्यक चिकित्सा व्यवस्था के निर्देश

सीहोर (निप्र)। कुबेरेश्वर धाम ग्राम चितावलिया हेमा मे 25 फरवरी से 3 मार्च तक बितृलेश सेवा समिति द्वारा रूद्राक्ष महोत्सव अन्तर्गत शिवमहापुराण कथा का का वाचन पंडित प्रदीप मिश्रा द्वारा किया जाना हे। महोत्सव के दौरान प्रतिदिन बड़ी संख्या मे श्रद्धालुगण की भीड एकत्रित होगी। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी एवंसिविल सर्जन, को कार्यक्रम के दौरान चिकित्सा व्यवस्था बनाये रखाने के निर्देश दिये हे। उन्होंने आयोजन स्थल पर एकत्रित श्रद्धालुओं के लिए 24 फरवरी से कार्यक्रम समाप्ति तक समुचित चिकित्सा व्यवस्था बनाये रखने एवं स्वयं चिकित्सा व्यवस्थाओं पर सतत् निगरानी रखेगे एवं एम्बुलेंस मय स्टाफ के उपलब्ध कराने के निर्देश दिये हे। जीवनरक्षक एवं आवश्यक दवाओं की पर्याप्त व्यवस्था रखी जावे एवं पीने योग्य पानी की जाँच की जायें। कथा स्थल पर मिनि आईसीसू का सेट व पर्याप्त संख्या मे चिकित्सक मय स्टाफ की ड्यूटी लगाना सुनिश्चित करे।

जिले में 18 केन्द्रों पर हुई थी धान की खरीदी

भुगतान नहीं होने से आर्थिक संकट से जूझ रहे किसान

धान खरीदी : जिले के 3 हजार से अधिक किसानों का 38 करोड़ भुगतान अटका

संजय द्विवेदी

बैतूल। समर्थन मूल्य पर धान खरीदी को एक माह का समय बीत चुका है, लेकिन अभी तक किसानों को भुगतान नहीं हुआ है। भुगतान नहीं होने के कारण किसानों को आर्थिक परेशानी से जूझना पड़ रहा है। किसानों का करीब 38 करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान बकाया है। भुगतान के लिए किसान समिति के चक्कर काट रहे हैं, लेकिन अधिकारी भुगतान को लेकर संतोषजनक जवाब नहीं दे पा रहे है। उल्लेखनीय है कि जिले में धान खरीदी के लिए 18 उपार्जन केंद्र बनाए गए थे और इन केंद्रों में 6 हजार 916 किसानों के माध्यम से 4 लाख 75 हजार 455 क्विंटल धान की खरीदी की गई। जिन्हें 109 करोड़ का भुगतान होना था, इसमें से 10 जनवरी के पहले 71.12 करोड़ रुपए का भुगतान किसानों को कर दिया है, लेकिन तीन हजार से अधिक किसानों को 38.23 लाख का भुगतान अभी तक नहीं हुआ है। भुगतान नहीं होने से किसानों को आर्थिक संकट से जूझना पड़ रहा है। अकेले पुनर्वास क्षेत्र के किसानों का 16 करोड़ का भुगतान अटका हुआ है। जबकि खरीदी को बंद हुए करीब एक माह का समय बीत चुका है। ऐसे में भुगतान में विलंब होने के चलते किसान परेशान है। किसानों को भुगतान के लिए बार-बार

समितियों के चक्कर काटने पड़ रहे है।

समितियों को भी मात्र 50 फीसदी ही भुगतान – धान उपार्जन करने वाले समितियों का कमीशन भी भुगतान नहीं होने के चक्कर में अटक गया है। बताया गया कि समितियों का करीब 50 फीसदी भुगतान नहीं हो सका है। वहीं लेबर का महज 2.66 लाख रुपए का ही भुगतान हुआ है। इधर, परिवहन का 38 लाख 46 हजार रुपए का बिल बकाया है जिसमें से 9 लाख 21 हजार रुपए का ही भुगतान हुआ है। समितियों का कहना था कि पिछले साल भी भुगतान को लेकर यही स्थिति थी। अधिकारियों से किसानों के भुगतान को लेकर कई बार पत्राचार किया गया है, लेकिन आश्वासन के सिवाए कुछ नहीं मिल रहा है। पिछले एक माह से भुगतान को लेकर आश्वासन ही दिया जा रहा है। ऐसी स्थिति में किसान समितियों के चक्कर काट रहे हैं।

भुगतान नहीं होने से किसानों के अटके जरूरी काम – धान खरीदी के बाद भी भुगतान नहीं होने से किसानों में नाराजगी है। किसानों का कहना है कि शुरुआत में तो किसानों को भुगतान कर दिया गया, लेकिन अब भुगतान में रोक लगा दी गई है। पिछले एक महीने से भुगतान के लिए समितियों के चक्कर काट रहे हैं, लेकिन आश्वासन के अलावा कुछ नहीं मिल रहा है। किसानों ने बताया कि किसी के घर शादी का कार्यक्रम है तो किसी को मकान का काम करवाना है। इसके अलावा भी कई जरूरी काम राशि नहीं मिलने के कारण रूके पड़े है। किसानों ने बताया कि भुगतान कब तक होगा, इसको लेकर अधिकारी भी ठोस जवाब नहीं दे रहे हैं। ऐसे में अपनी उपज बेचकर हमें ही परेशान होना पड़ रहा है।

एनसीसीएफ ने की धान की खरीदी

शासन ने उपार्जन नीति, एसओपी एवं उपार्जित धान की मिलिंग के लिए नई नीति जारी करते हुए भारतीय राष्ट्रीय उपभोक्ता सहकारी संघ को धान उपार्जन एवं मिलिंग की जिम्मेदारी सौंप दी। जिसके बाद धान खरीदी एनसीसीएफ द्वारा जिले भर में की गई। शुरुआत में किसानों को धान खरीदी का भुगतान किया गया, लेकिन खरीदी बंद होने के बाद भुगतान बंद कर दिया गया। स्थिति यह है कि एनसीसीएफ की महिला प्रभारी द्वारा भुगतान को लेकर रुचि नहीं दिखाई जा रही है जिसकी वजह से जिले में किसान परेशान है। बताया जा रहा है कि पहली बार प्रदेश में बैतूल जिले के साथ चार जिले में धान की खरीदी की जिम्मेदारी नेशनल कंज्यूमर कोआपरेटिव फेडरेशन संस्था दिल्ली को दी थी। जिसके द्वारा अब तक भुगतान नहीं किया है।

इनका कहना है –

सभी किसानों के ई.पी.ओ. (इलेक्ट्रॉनिक पेमेंट ऑर्डर) पहले ही दिए हैं। धान खरीदी करने वाली संस्था द्वारा जल्द ही भुगतान किये जाने का आश्वासन दिया है। उम्मीद है कि दो-तीन दिन में सभी किसानों का भुगतान हो जायेगा।

– केके टेकाम,
जिला खाद्य आपूर्ति अधिकारी बैतूल

कमिश्नर नर्मदापुरम श्री तिवारी ने प्रगतिरत सीएम राइज स्कूल घोड़ाडोंगरी का किया निरीक्षण

जून 2025 तक निर्माण कार्य पूर्ण करने के दिए निर्देश

बैतूल (निप्र)। कमिश्नर नर्मदापुरम श्री के जी तिवारी ने सोमवार को कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के साथ घोड़ाडोंगरी में प्रगतिरत सीएम राइज स्कूल घोड़ाडोंगरी का निरीक्षण किया। उन्होंने प्रगतिरत बिल्डिंग के नक्शे पर प्रस्तावित कार्यों में पूर्ण और शेष कार्यों की जानकारी ली। उन्होंने स्कूल के प्रत्येक तल में जाकर निर्माण कार्यों की गुणवत्ता परखी। उन्होंने स्कूल के क्लास रूम्स, प्रयोगशाला, छत, शौचालय, दरवाजे, खिड़कियां इत्यादि कार्यों का जायजा लिया। उन्होंने सुरक्षा के सभी मानक मापदंडों का विशेष ध्यान रखने के निर्देश अधिकारियों को दिए। उन्होंने स्कूल की खिड़कियों की जालियों को व्यवस्थित लगाने और दरवाजों को बच्चों की सुविधा के अनुरूप बनाएं जाने के निर्देश दिए। उन्होंने प्राचार्य सीएम राइज घोड़ाडोंगरी को निर्माण कार्यों की गंभीरता से मॉनिटरिंग करने की हिदायत दी। उन्होंने कार्य एजेंसी पीआईयू और संबंधित ठेकेदार को आगामी जून 2025 तक स्कूल निर्माण कार्य गुणवत्तापूर्ण रुप से पूर्ण करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य श्रीमती शिल्पा जैन, पीआईयू के अधिकारी , तहसीलदार और अन्य अधिकारी उपस्थित रहें।

शिवाजी महाराज की जयंती पर लोनारी कुनबी समाज ने निकाली शोभायात्रा

जिला चिकित्सालय में अंकुरित आहार वितरण, शिवाजी ऑडिटोरियम में हुई विशाल जनसभा

बैतूल। जिला क्षत्रिय लोनारी कुनबी समाज संगठन बैतूल के तत्वावधान में छत्रपति शिवाजी महाराज की 395वीं जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर सुबह जिला चिकित्सालय में अंकुरित आहार वितरण किया गया। इसके बाद शिवाजी सांस्कृतिक भवन से भव्य रैली निकाली गई, जिसमें सैकड़ों महिलाओं और पुरुषों ने भाग लिया।

शिवाजी जयंती के उपलक्ष्य में भव्य झांकी भी निकाली गई, जो शहरभर में आकर्षण का केंद्र रही। मार्ग में विभिन्न महापुरुषों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण किया गया। इसके उपरांत गणमान्य नागरिकों ने शिवाजी महाराज की प्रतिमा पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। शिवाजी ऑडिटोरियम में आयोजित विशाल जनसभा में नगर पालिका अध्यक्ष पार्वतीबाई बारस्कर ने अध्यक्षता की, जबकि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक हेमंत खंडेलवाल थे। इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष सुधाकर पवार, पूर्व भाजपा अध्यक्ष बसंत माकोड़े, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र देशमुख, पूर्व जिला उपाध्यक्ष नरेश फाटे, जिला पंचायत सदस्य शैलेंद्र कुंभारे, उर्मिला गव्हाडे, सैनिक समिति के पंढरी डांगे, जिला अध्यक्ष दिनेश मस्की, सेवा संगठन के अध्यक्ष मुन्ना मानकर, महिला संगठन अध्यक्ष सिद्धलता महाले, डॉ. प्रताप देशमुख, पी.आर. मगरदे, एस.वाई. पानसे, दैनिक मत के संपादक बलवंत धोटे सहित कई स्थानीय पार्षदगण उपस्थित रहे।

विधायक हेमंत खंडेलवाल ने शिवाजी महाराज के आदर्शों को जीवन में अपनाने पर जोर दिया, वहीं भाजपा अध्यक्ष सुधाकर पवार ने उनके जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। जिला सचिव प्रवीण ठाकरे व समिति के अन्य सदस्यों ने अतिथियों का सम्मान किया। छत्रपति शिवाजी विद्या मंदिर की बालिकाओं ने स्वागत गीत और सरस्वती वंदना प्रस्तुत की, जिससे पूरा माहौल भक्तिमय हो गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में दिनेश मस्की, प्रवीण ठाकरे, नामदेव बारस्कर, रविशंकर पारखे, सुरेश गायकवाड़, नारायण चढ़ोकार, व्ही.आर. बारस्कर और कैलाश ठाकरे का विशेष योगदान रहा।

महाशिवरात्रि मेला 2025: पचमढ़ी में श्रद्धालुओं की उमड़ी भीड़, प्रशासन ने की चाक चौबंद व्यवस्था

नर्मदापुरम (निप्र)। नर्मदापुरम जिले के प्रसिद्ध हिल स्टेशन पचमढ़ी में महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर आयोजित होने वाले महाशिवरात्रि मेले के पहले दिन श्रद्धालुओं का तांता लग गया। पचमढ़ी में श्रद्धालुओं के आने का सिलसिला आज से शुरू हुआ और अनुमानित 500 से 600 वाहनों के साथ श्रद्धालु महाशिवरात्रि मेले में भाग लेने के लिए पहुंचे। प्रशासन ने मेले के आयोजन को लेकर विशेष तैयारियां की हैं। स्वच्छता, परिवहन, स्वास्थ्य और सुरक्षा की पुख्ता व्यवस्थाऐं की गई है, ताकि श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े। प्रशासन की ओर से पूरी मेला अवधि में व्यवस्था बनाए रखने के लिए विशेष इंतजाम किए गए हैं।

पहले दिन अनुमानित 10 हजार श्रद्धालुओं ने किए भगवान भोलेनाथ के दर्शन : पहले दिन लगभग 10,000 श्रद्धालुओं ने पचमढ़ी पहुंचकर भगवान भोलेनाथ के दर्शन किए। यह संख्या आने वाले दिनों में और बढ़ने की संभावना है। मेले में शामिल होने के लिए श्रद्धालुओं का उत्साह देखने योग्य था।

बेहतरीन रही यातायात व्यवस्था, अस्थाई बस स्टैंड पर खड़े हुए वाहन : यातायात की व्यवस्था को सुचारू बनाने के लिए आरटीओ विभाग ने कार्ययोजना अनुसार वाहनों का आवागमन बहुत व्यवस्थित रूप से करवाया। अस्थाई बस स्टैंड पर सभी वाहन खड़े किए गए हैं, जिससे यातायात में कोई अवरोध नहीं हुआ और श्रद्धालुओं को आसानी से मेला स्थल तक पहुंच सके।

अपर कलेक्टर ने लिया व्यवस्थाओं का जायजा : मेले के पहले दिन की व्यवस्थाओं का जायजा लेने के लिए अपर कलेक्टर श्री डी के सिंह भी पचमढ़ी पहुंचे। उन्होंने मौके पर जाकर व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया और अधिकारियों को जरूरी निर्देश दिए, ताकि श्रद्धालुओं को हर संभव सुविधा मिल सके।

राजस्व महा अभियान 2.0 में उत्कृष्ट कार्य करने पर सम्मानित

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री रौशन कुमार सिंह ने राजस्व महा अभियान 2.0 तहत क्रियान्वित कार्यों में उत्कृष्ट कार्य करने पर जिले की सभी 12 तहसीलों को प्रशंसा पत्र प्रदाय कर सम्मानित किया है। उक्त कार्यों के क्रियान्वयन में अहम भूमिका निभाते हुए प्रदेश स्तरीय जारी ग्रेडिंग सूची में उत्कृष्ट स्थान हासिल करने पर कलेक्ट्रेट के बेतवा सभा कक्ष में आयोजित राजस्व कार्यों की समीक्षा बैठक के दौरान कलेक्टर श्री सिंह के द्वारा एसडीएम और तहसीलदार को प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया गया है। राजस्व महाभियान तहत क्रियान्वित कार्यों की जारी प्रदेश स्तरीय ग्रेडिंग सूची में विदिशा जिले की ग्यारसपुर तहसील ने 7 वीं रैंक हासिल की है, जबकि कुरवाई तहसील ने 11वीं, गुलाबगंज तहसील ने 12वीं, नटेरन तहसील ने 19वीं, पठारी तहसील ने 24वीं, सिरोंज तहसील ने 30वीं, शमशाबाद तहसील ने 34वीं, विदिशा तहसील ने 40वीं, बासौदा तहसील ने 42वीं, त्योंदा तहसील ने 43वीं, लटेरी तहसील ने 98वीं और विदिशा नगरीय तहसील ने 155वीं रैंक हासिल की है। जिले की सभी तहसीलों में राजस्व महाभियान तहत नामांतरण, बंटवारा, अभिलेख दुरूस्ती, सीमांकन, चिन्हांकन, नक्शा बटांकन और आधार आरओ लिकिंग के कार्यों में उत्कृष्ट कार्यो का संपादन किया गया था।

सामूहिक विवाह सम्मेलन के बारे में आष्टा एसडीएम ने दी जानकारी

सीहोर (निप्र)। आष्टा में मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के अंतर्गत आयोजित होने वाले सामूहिक विवाह सम्मेलन के बारे में आष्टा एसडीएम श्रीमती स्वाति मिश्रा ने जानकारी देते हुए बताया कि एक डिजिटल समाचार पत्र में 01 मार्च को विवाह सम्मेलन आयोजित होना प्रकाशित किया गया है। इस संबंध में वस्तुस्थिती यह है कि इस सामूहिक विवाह सम्मेलन की तिथि 25 फरवरी 2025 निर्धारित है।

बालिकाओं को सर्वाइकल कैंसर रोधी एचपीवी टीकाकरण का दूसरा डोज लगाया

बैतूल (निप्र)। जिला चिकित्सालय बैतूल में सोमवार को कैंसर टीकाकरण सत्र का आयोजन किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.रविकांत उइके ने बताया कि इस दौरान 8 बालिकाओं को सर्वाइकल कैंसर रोधी एचपीवी टीकाकरण का दूसरा डोज लगाया गया। जिसमें शासकीय कन्या शिक्षा परिसर मानस नगर कक्षा 8वीं की छात्रा कु.अंजू पिता श्री दिलीप उइके, कु.वर्षा पिता श्री प्रताप धुर्वे कक्षा 7वीं, कु.सूर्यवंती पिता श्री पंचम सिंह बारस्कर कक्षा 8वीं, कु.काजल पिता श्री देवीलाल वाड़िवा कक्षा 9वीं, कु.दीपिका पिता श्री गुलाब धुर्वे कक्षा7वीं, कु.उमा पिता श्री दैलाश धुर्वे कक्षा 7वीं, कु.साक्षी पिता श्री शिवराम परते कक्षा 7वीं एवं आउट साइडर कु.शिवांगी पिता श्री संजू चौरेकर शामिल है। सीएमएचओ डॉ.उइके ने बालिकाओं को परामर्श देते हुए बताया कि यह वैक्सीन सुरक्षित है। सर्वाइकल कैंसर से बचने के लिए जल्द से जल्द वैक्सीन लगाना ही बेहतर उपाय है। इस अवसर पर सिविल सर्जन डॉ जगदीश घोरे, आरएमओ डॉ रानू वर्मा, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ ईशा डेनियल, जिला मीडिया अधिकारी श्रीमती श्रुति गौर तोमर, डीपीएम डॉ विनोद शाक्य, अस्पताल प्रबंधक डॉ शिवेन्द्र अम्बुलकर, डीसीएम श्री कमलेश मसीह, सीपीएचसी सलाहकार सुश्री रेजीना जेम्स, एनएमए श्री शेखर हारोड़े, स्टाफ नर्स श्रीमती सविता अमरूते, एएनएम श्री दीपिका उइके सहित कन्या शिक्षा परिसर बैतूल की शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।

गौ सेवा पुण्य का कार्य है, गौशाला संचालक गायों की करें बेहतर देखभाल: कलेक्टर

जिले में संचालित शासकीय एवं आशासकीय गौशालओं के लिए 4 करोड़ , 38 लाख 17 हजार 960 रूपये का किया गया अनुमोदन

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. की अध्यक्षता में जिला पंचायत सभाकक्ष में जिला गौपालन एवं पशुधन संवर्धन समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने जिले में संचालित पंजीकृत गौशालाओं की विस्तार से समीक्षा की तथा समिति के सदस्यों से गौशालाओं के बेहतर संचालन के लिए चर्चा की। बैठक में कलेक्टर श्री बालागुरू के ने नियमानुसार ऑडिट कराने के साथ ही अनुदान राशि की उपयोगिता का प्रमाण पत्र भी प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर श्री बालागुरू के ने जो गौशालाएं अपूर्ण हैं, उन्हें शीघ्र पूर्ण कराने के जिला पंचायत को निर्देश दिए। इसके साथ ही उन्होंने गौशाला संचालकों से कहा कि गौशाला की निर्धारित क्षमता के अनुसार गौवंश रखें ताकि अनुदान मिल सके। समीक्षा के दौरान उन्होने कहा कि गौ सेवा भी पुण्य का कार्य है। गायों की बेहतर देखभाल करें और गौशाला में उन्हें अंत तक रखें, उन्हें जाने नहीं दें। बैठक में गौवंश के भरण पोषण के लिए वित्तीय वर्ष 2024-25 में मुख्यमंत्री गौसेवा योजना के अन्तर्गत शासकीय गौशालाओं के लिए 02 करोड़ 16 लाख 63 हजार 320 रूपये तथा अशासकीय गौशालाओं को भूसा चारा के लिए आर्थिक राशि 02 करोड़ 21 लाख 54 हजार 640 रूपये का अनुमोदन किया गया। इसके साथ ही माह फरवरी 2024 से निरंतर संचालित पंजीकृत 09 गौशालाओं को अनुदान देने का अनुमोदन किया गया। इसके साथ ही निष्क्रिय गौशालाओं का पंजीयन निरस्त करने का भी अनुमोदन किया गया। बैठक में जिला पंचायत सीईओ डॉ नेहा जैन ने संबंधित पंचायतों के सचिवों तथा सरपंचों को गौशालाओं का बेहतर ढ़ंग से संचालन के निर्देश दिए। उन्होंने गौशालाओ के पास उपलब्ध भूमि में गायों के लिए चारागाह विकसित करने के निर्देश दिए। बैठक के दौरान पशुपालन एवं डेयरी विभाग के उप संचालक डॉ एकेएस भदोरिया ने जिले में संचालित गौशालओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। बैठक में गौशाला संचालकों ने गौवंश के संरक्षण के लिए कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये। बैठक में जिले में संचालित गौशालाओं के संचालक, सरपंच तथा पंचायत सचिव उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

जनसुनवाई में आए कुल 91 आवेदन

धार (निप्र)। अपर कलेक्टर अश्विनी कुमार रावत ने मंगलवार को जिला पंचायत सभाकक्ष में आयोजित जनसुनवाई में आवेदकों की समस्याओं को सुना और संबंधित अधिकारियों को समस्याओं के निराकरण के लिए निर्देश दिए। इस दौरान संयुक्त कलेक्टर जगदीश मेहरा और एसडीएम रोशनी पाटीदार ने भी आवेदकों की समस्याओं को सुना। इस जनसुनवाई में कुल 91 आवेदन प्राप्त हुए। इस जनसुनवाई में प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ दिलाने, अतिक्रमण हटाने, अवैध कब्जा हटवाने, भूखंड का पट्टा दिलवाने, अतिक्रमण हटाने, वन अधिकार पट्टा दिलवाने, बीमारी के लिए आर्थिक सहायता दिलवाने, एरिया राशि का भुगतान करवाने इत्यादि संबंधी आवेदन प्राप्त हुए।

पर्याप्त मात्रा में औषधि उपलब्ध होने से पशुओं का हो रहा उपचार

खण्डवा (निप्र)। पशुपालन विभाग द्वारा पर्याप्त मात्रा में औषधि उपलब्ध होने से पशु कल्याण समिति को 15रू. शुल्क से पशुपालकों के पशुओं का उपचार हो रहा है तथा बधियाकरण भी किया जा रहा है। उप संचालक पशुचिकित्सा डॉ. हेमंत शाह ने बताया कि पशुपालकों में पशु चिकित्सा में विश्वास के साथ पशु उपचार करने एवं बधियाकरण करने की जागरूकता आई है। इसके फलस्वरुप पशुपालक का पशु के उपचार पर अधिक रुपए खर्च नहीं हो रहे हैं, जो की पशुपालक के लिए लाभप्रद है। उन्होंने बताया कि समय पर इलाज करने से दुधारू पशुओं का उत्पादन भी कम नहीं होता जिससे किसान की आय में वृद्धि होती है।

मुख्यमंत्री बाल हृदय उपचार योजना दीपिका के लिए बनी वरदान

खण्डवा (निप्र)। खंडवा विकासखण्ड के ग्राम खेड़ी कित्ता के निवासी नवलसिंह की बेटी दीपिका उम्र 16 वर्ष को बचपन से ही चलने–फिरने में थकान होती थी। वर्तमान में दीपिका ग्राम अटूटभिखारी के सरकारी स्कूल में कक्षा आठवी में अध्ययनरत है। सात वर्ष पूर्व स्वास्थ्य विभाग की टीम के द्वारा उनकी जाँच की गई, तो हृदय संबंधी बीमारी का पता चला, परंतु उनके पिताजी व परिजन सर्जरी कराने से डर रहे थे। फिर आर.बी.एस.के टीम ने दीपिका की स्कूल अटुटभिखारी में पहुँचकर पुन: जाँच कर उनके परिजन को समझाया कि मुख्यमंत्री बाल हृदय उपचार योजना के तहत दीपिका की नि:शुल्क सर्जरी हो जायेगी। दीपिका के पिता श्री नवलसिंह अपनी बेटी को लेकर अरविंदो हॉस्पिटल इंदौर लेकर गए। वहाँ जाकर पूरी जाँच करवाने के पश्चात दीपिका को ऑस्टियम सेप्टल डिफेक्ट नामक बीमारी का पता चला। इस बीमारी में खून का बहाव बढ़ने से फेफड़ों पर दबाव काफी बढ़ जाता है। इसलिए दीपिका के दिल का छेद बंद करना आवष्यक था। विभाग द्वारा प्राक्कलन तैयार कर 1 लाख 41 हजार की राषि स्वीकृति करने के पश्चात अरविंदो हॉस्पिटल को भेजा गया और वहाँ पर दीपिका की चिकित्सकों की टीम के द्वारा रोबोटिक सर्जरी की गई। रोबोटिक सर्जरी से सीने के सामने की हड्डी खोलने या काटने की जरुरुत नहीं पड़ी। अभी दीपिका घर पर स्वास्थ्य लाभ ले रही है। दीपिका के पिता श्री नवल सिंह ने सरकार का धन्यवाद देते हुए इस योजना को गरीबों के स्वास्थ्य के लिए वरदान कहा।

ब्लाक स्तरीय एक दिवसीय अल्प विराम कार्यशाला पुनासा जनपद सभागार में आयोजित

खण्डवा (निप्र)। मध्य प्रदेश राज्य आनंद संस्थान आनंद विभाग द्वारा ब्लाक स्तरीय एक दिवसीय अल्प विराम कार्यशाला सोमवार को पुनासा जनपद पंचायत सभागार में आयोजित की गई। जिसमें पंचायत विभाग, महिला एवं बाल विकास, स्वास्थ्य विभाग, कृषि विभाग, शिक्षा विभाग के 60 अधिकारी कर्मचारियों ने सहभागिता की। राज्य स्तरीय मास्टर ट्रेनर श्री गणेश कानडे, नारायण फरकले, प्रमेंद्र अटूट द्वारा विभिन्न टूल्स के माध्यम से सकारात्मक जीवन जीने एवं तनाव मुक्त जीवन जीने की कला सिखाई। कार्यक्रम का शुभारंभ एक सुंदर प्रार्थना ऽहमको मन की शक्ति देना.... से प्रारंभ की गई। सभी प्रतिभागियों ने अपना परिचय, नाम, बचपन का नाम, अभिरुचि के साथ रखा। राज्य आनंद संस्थान का परिचय विडियो फिल्म दिखाया, मास्टर ट्रेनर गणेश कानडे ने जीवन का लेखा–जोखा सत्र लिया। मास्टर ट्रेनर श्री नारायण फरकले ने फ्रीडम ग्लास विधि से स्वयं की जीवन में परिवर्तन की स्टोरी शेयर की। श्री प्रमेंद्र अटूट ने सीसीडी सत्र लिया। श्रीमति रजनी चक्रवेदी ने कष्ट देने वाली स्टोरी शेयर की तथा मनोरंजक गतिविधियां भी करवाई।

तहसीलदार आरओआर लिंकिंग कार्य 28 फरवरी तक पूर्ण करें - कलेक्टर

सोनकच्छ में आरओआर लिंकिंग कार्य कम होने पर सोनकच्छ तहसीलदार दीपिका परमार को दो वेतन वृद्धि रोकने संबंधी शोकाज नोटिस

राजस्व अधिकारी अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही करें और अतिक्रमण करने वालों पर पेनल्टी भी लगाए। सभी तहसीलदार कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए अपनी शक्तियों का उपयोग करें

देवास (निप्र)। कलेक्टर श्री ऋतुराज सिंह की अध्यक्षता में समय-सीमा संबंधी लंबित पत्रों के निराकरण की प्रगति तथा अंतरविभागीय समन्वय से संबंधित मामलों की समीक्षा बैठक कलेक्टर कार्यालय सभाकक्ष में संपन्न हुई। बैठक में सीईओ जिला पंचायत श्री हिमांशु प्रजापति, अपर कलेक्टर श्री बिहारी सिंह, एसडीएम टोंकखुर्द श्री कन्हैयालाल तिलवारी, एसडीएम बागली श्री आनंद मालवीय, एसडीएम कन्नौद श्री प्रवीण प्रजापति, डिप्टी कलेक्टर श्री संजीव सक्सेना, डिप्टी कलेक्टर श्री अभिषेक शर्मा, डिप्टी कलेक्टर सुश्री रितु चौरसिया सहित अन्य विभागों के जिला अधिकारीगण उपस्थित थे। समय-सीमा बैठक में विकासखण्ड स्तरीय अधिकारी वर्चुअल शामिल हुए।

कलेक्टर श्री सिंह ने राजस्व वसूली की तहसीलवार समीक्षा कर शतप्रतिशत राजस्व वसूली के निर्देश दिये। राजस्व वसूली कम होने पर संबंधित तहसीलदारों को निर्देश दिये कि अभियान चलाकर कार्यवाही करें और शतप्रतिशत राजस्व वसूली करें। उन्होंने एसडीएम को भी निर्देश दिये कि राजस्व वसूली की लगातार समीक्षा करें।

कलेक्टर श्री सिंह ने निर्देश दिये कि आरओआर लिंकिंग कार्य शिविर लगाकर करें। जिले में प्रतिदिन 18 हजार आरओआर लिंकिंग का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। आरओआर लिंकिंग का कार्य प्राथमिकता से करें। सोनकच्छ में आरओआर लिंकिंग कार्य कम होने पर कलेक्टर श्री सिंह ने सोनकच्छ तहसीलदार दीपिका परमार की दो वेतन वृद्धि रोकने संबंधी शोकाज नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। उन्होंने सख्त निर्देश दिए कि सभी तहसीलदार शतप्रतिशत आरओआर लिंकिंग कार्य करें। सभी पटवारियों को आरओआर लिंकिंग कार्य में प्रगति लाने के लिए निर्देशित करें। अगली टीएल में आरओआर लिंकिंग कार्य में प्रगति दिखनी चाहिए। प्रत्येक तहसील में प्रतिदिन कम से कम 800 आरओरआर लिंकिंग होनी चाहिए। सभी तहसीलदार अभियान चलाकर आरओआर लिंकिंग कार्य 28 फरवरी तक पूर्ण करें।

कलेक्टर श्री सिंह ने कहा कि जिले में शत प्रतिशत पीएम किसान सम्मान निधि के हितग्राहियों की फॉर्मर रजिस्ट्री बनाये। सभी एसडीएम अपने-अपने क्षेत्र में इस कार्य को लीड करें। एसडीएम सभी पटवारी, जीआरएस सचिव की बैठक लें। फॉर्मर रजिस्ट्री के लिए पटवारी, जीआरएस सचिव की ड्यूटी लगाये और सभी को लक्ष्य दें। एसडीएम प्रतिदिन सुबह रिव्यू करें और काम नहीं करने वालों पर कार्रवाई करें।

कलेक्टर श्री सिंह ने कहा कि सबसे ज्यादा शिकायतें अतिक्रमण से संबंधी आ रही है। राजस्व अधिकारी अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही करें और अतिक्रमण करने वालों पर पेनल्टी भी लगाए। सभी तहसीलदार कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए अपनी शक्तियों का उपयोग करें। कलेक्टर श्री सिंह ने विभागों द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के लक्ष्य के विरुद्ध उपलब्धि की समीक्षा की और सभी विभागों को निर्देश दिए कि शतप्रतिशत पात्र नागरिकों को योजनाओं का लाभ दें। कलेक्टर श्री सिंह ने कहा कि नल जल योजना में सभी कार्य पूर्ण होने पर ही हैंड ओवर लें। इस बात का विशेष ध्यान रखे की खोदी गई सड़क का रेस्टोरेशन अच्छे से हो और योजना के संचालन के लिए पानी की उपलब्धता हो।

कलेक्टर श्री सिंह ने कहा कि 12वीं की परीक्षा 25 फरवरी से शुरू होगी। परीक्षा की मॉनिटरिंग के लिए एसडीएम फ्लाइंग स्क्वाड बनाएं। जिला स्तर पर 07 फ्लाइंग स्क्वाड बनाएं, एक नगर निगम और 06 विकासखण्डों के लिए। प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर अलग से फ्लाइंग स्क्वाड बनाये।

कलेक्टर सिंह ने सीएम हेल्पलाइन में लम्बित शिकायतों की समीक्षा कर विभागों को ग्रेडिंग सुधारने के निर्देश दिये। कलेक्टर श्री सिंह ने कहा कि अधिकारी शिकायतों का संतुष्टिपूर्वक निराकरण करें। सीएम हेल्पलाइन पर वन विभाग, जनजातीय कार्य विभाग और सामान्य प्रशासन डी ग्रेड में होने पर कलेक्टर श्री सिंह ने शिकायतों का निराकरण कर ग्रेडिंग सुधारने के निर्देश दिये। कलेक्टर सिंह ने कहा कि सीएम हेल्पलाइन में शिकायतों के निराकरण में डी ग्रेड बर्दास्त नहीं की जायेगी। सभी विभाग कम से कम बी ग्रेड में रहें। विभाग बी ग्रेड से नीचे नहीं जाये।

बच्चों के लिए 'दस्तक अभियान' का द्वितीय चरण हुआ प्रारंभ

इन्दौर (निप्र)। सम्पूर्ण प्रदेश के साथ-साथ इंदौर जिले में भी आज 18 फरवरी को ÷दस्तक अभियान÷ के द्वितीय चरण का शुभारंभ किया गया है। इस अभियान के दौरान विटामिन-ए अनुपूरण 9 माह से 5 वर्षीय समस्त बच्चों का किया जाएगा तथा एनीमिया फॉलोअप परीक्षण उन बच्चों का किया जाएगा जो दस्तक अभियान के प्रथम चरण में अल्प, मध्यम एवं गंभीर एनीमिक बच्चों के रुप में चिह्नित किए गए थे। ये सेवाएं ङ्क॥स्ह्ष्ठ/ ॥स्ह्ष्ठ के दौरान दी जाएगी।

ह्रस्न॥स्-5 के अनुसार प्रदेश में 72.7 प्रतिशत बच्चे एनीमिया से ग्रस्त हैं और प्रथम चरण की रिपोर्ट के अनुसार 54 प्रतिशत बच्चे एनीमिया से ग्रस्त हैं, जिसमें से 0.4 प्रतिशत बच्चों में गंभीर एनीमिया है। इसका दुष्परिणाम यह है कि बच्चों में चिड़चिड़ापन, भूख में कमी, बच्चों का जल्दी थक जाना, सांस फूलना, आम बीमारी जैसे- सर्दी-खांसी, उल्टी, दस्त आदि बार-बार होना, उम्र के अनुसार शारीरिक एवं मानसिक विकास न होना, शरीर में सूजन आना जैसे लक्षण सम्मिलित हैं।

09 माह से 05 वर्षीय समस्त बच्चों को विटामिन-ए का अनुपूरण आयु अनुसार किया जाएगा। आहार से प्रतिदिन की आवश्यकता के कुल 50 प्रतिशत ही विटामिन-ए की पूर्ति हो पाती है। इसकी कमी से दस्त एवं खसरे के प्रकरणों में बढ़ावा मिलता है, बच्चों में रतौंधी, कार्निया का नष्ट होना एवं अंधत्व प्रमुख कारण हैं। रोगों से लड़ने की क्षमता कम हो जाती है और संक्रमण की अधिकता हो जाती है। संक्रमणजनित एनीमिया में भी वृद्धि होती है और बच्चों का विकास भी प्रभावित होता है। विटामिन-ए की कमी का प्रमुख कारण माँ का पहला पीला गाढ़ा दूध, (खीस न पिलाना), पहले 06 माह में %केवल स्तनपान% न करना, 06 माह के बाद पूर्ण रुप से स्तनपान बंद कर देना, बच्चों को खिलाए जाने वाले आहार में विटामिन-ए युक्त भोजन का न होना, बार-बार खसरा एवं दस्त जैसा संक्रमण होना।

जिले में आज दस्तक अभियान का शुभारंभ क्षेत्रीय संचालक स्वास्थ्य सेवाएं डॉ. शाजी जोसेफ तथा मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. बी. एस. सैत्या ने विटामिन-ए अनुपूरण करके किया। दस्तक दल को हरी झंडी दिखाकर फील्ड में रवाना किया गया। इस अवसर पर जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. शरद गुप्ता, जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ. तरुण गुप्ता, प्रभारी झोनल चिकित्सा अधिकारी डॉ. आशुतोष शर्मा, जिला कार्यक्रम प्रबंधक डॉ. शिवराज सिंह चौहान आदि उपस्थित थे।

उज्जवला योजना के गैस सिलेण्डरों का हो रहा था वाहनों की रिफलिंग में दुरूपयोग

खण्डवा (निप्र)। पुनासा तहसील के ग्राम सुलगांव स्थित श्री केशरीनंदन भारत गैस सुलगांव दुकान में एलपीजी गैस के अवैध भण्डारण एवं रिफलिंग की सूचना के आधार पर जिला आपूर्ति अधिकारी श्री अरूण तिवारी के द्वारा कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी श्री सुनील नागराज के माध्यम से जाँच कराई जाने पर ग्राम सुलगांव में श्री केशरीनंदन भारत गैस सुलगांव नाम से संचालित दुकान में 17 भरे व 01 खाली कुल 18 घरेलू गैस सिलेण्डर भण्डारित पाए गए, जिसमें से एक सिलेण्डर उल्टा रखा होकर एक मोटर से रबर पाईप व रेग्यूलेटर के माध्यम से मोटर में लगा हुआ पाया गया। सूचना अनुसार जाँच के कुछ समय पूर्व ही आरोपी त्रिलोक यादव द्वारा वाहन में गैस रिफिल किया जाना स्वीकार किया गया तथा बताया कि उसके द्वारा उज्जवला योजना के उपभोक्ताओं से 14.2 केजी के भरे हुए गैस सिलेण्डर की खरीदी की जाती है। इस गैस सिलेण्डर की गैस का उपयोग वाहनों में रिफलिंग करने तथा अन्य लोगों को भरे गैस सिलेण्डर विक्रय करने में किया जाता है। इस प्रकार जाँच में त्रिलोक यादव द्वारा घरेलू एलपीजी सिलेण्डर का अवैध भण्डारण कर मोटर गाड़ियों में अवैध रिफलिंग किया जाना पाए जाने से मौके पर 14.2 केजी के 17 भरे व 01 खाली कुल 18 घरेलू गैस सिलेण्डर, गैस रिफिल के लिए उपयोग हेतु रखा गया मोटर पंप, 01 तौलकाँटा क्षमता 50 केजी, रबर पाईप मय रेग्यूलेटर जप्त किये जाकर सुलगांव इण्डेन गैस एजेन्सी को सुपुर्दगी में दिए गए। उपरोक्त समस्त कार्यवाही अनुविभागीय अधिकारी पुनासा श्री शिवम प्रजापति के मार्गदर्शन में संपादित की गई। प्रकरण सक्षम न्यायालय में प्रस्तुत किया जा रहा है।

नपाध्यक्ष ने किया विकास कार्य का भूमि पूजन

जल भराव की समस्या का होगा समाधान

सीहोर (नप्र)। शहर में विकास कार्यों का सिलसिला तेजी से जारी है। वार्ड 14 में सडक व नाली निर्माण कार्य का भूमि पूजन किया गया।

बुधवार को मुख्य अतिथि, जिलाध्यक्ष नरेश मेवाड़ा और नगर पालिका अध्यक्ष प्रिंस राठौर ने शहर के वार्ड क्रमांक 14 में 15 लाख से अधिक राशि के विकास कार्य का भूमि पूजन स्थानीय पार्षद और क्षेत्रवासियों से कराया। भूमि पूजन के दौरान वार्ड 14 के अंतर्गत बाबा अंबेडकर भवन स्कूल के पीछे नाली निर्माण के अलावा वहीं समीप ही सड़क निर्माण का भूमि पूजन किया गया। जिससे यहां पर रहने वालों को जल भराव की समस्याओं का समाधान हो सकेंगे। वार्ड क्रमांक में भूमि पूजन के दौरान करीब साढ़े नौ लाख से नाली और साढ़े पांच लाख से सड़क का निर्माण कार्य पूरा किया जाएगा।

वार्ड क्रमांक 14 के पार्षद संतोष शाक्य ने बताया कि वार्ड के अंतर्गत नाली के अलावा सड़क का निर्माण नहीं होने के कारण गंदे पानी की निकासी नहीं होती थी, बारिश के दिनों में सड़क पर पानी जमा हो जाता था, इसको लेकर जब नगर पालिका अध्यक्ष श्री राठौर से चर्चा की तो उन्होंने तत्काल समस्या का समाधान किया है। भूमि पूजन के दौरान अजय पाल सिंह राजपूत, विजेन्द्र परमार, प्रदीप गौतम, मुकेश मेवाड़ा पार्षदों के अलावा क्षेत्रवासी उपस्थित थे।

आपसी सुलह और समझौते के साथ न्यायालयीन प्रकरणों के निराकरण के लिए 8 मार्च को नेशनल लोक अदालत

इन्दौर (निप्र)। न्यायालयों में लंबित प्रकरणों के आपसी सुलह और समझौते के साथ निराकरण के लिए आगामी 8 मार्च को नेशनल लोक अदालत आयोजित की जाएगी। इस लोक अदालत के आयोजन के लिए व्यापक तैयारियां प्रारंभ हो गई है। यह लोक अदालत राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली एवं म.प्र. राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार एवं प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्री अजय श्रीवास्तव इन्दौर के मार्गदर्शन में आयोजित होगी।

इसके तहत जिला न्यायालय इन्दौर, श्रम न्यायालय, परिवार न्यायालय एवं तहसील स्तर पर तहसील न्यायालय, डॉ. अम्बेडकर नगर, देपालपुर, सांवेर व हातोद में नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया जा रहा है। आयोजित नेशनल लोक अदालत में विभिन्न न्यायालयों में लंबित प्रकरण राजीनामे हेतु रखे गये हैं, जिनके अंतर्गत राजीनामा योग्य आपराधिक, सिविल, मोटर दुर्घटना क्लेम, विद्युत, चेक बाउंस, बैंक रिकवरी, जलकर, भू-अर्जन, वैवाहिक, अन्य प्रकरणों के साथ ही बैंक रिकवरी, विद्युत, व अन्य से संबंधित प्री-लिटिगेशन प्रकरण राजीनामे के आधार पर निराकरण हेतु रखे जा रहे हैं।

प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री अजय श्रीवास्तव द्वारा नेशनल लोक अदालत के संबंध में जिला मुख्यालय एवं समस्त तहसील न्यायालयों में पदस्थ न्यायाधीशों के साथ बैठक कर न्यायाधीशों से व्यक्तिगत रूचि लेकर अधिक से अधिक प्रकरणों का निराकरण कर नेशनल लोक अदालत की सफलता सुनिश्चित कराने हेतु निर्देशित किया गया है। प्रधान जिला न्यायाधीश द्वारा समस्त न्यायाधीशगण को निर्देशित किया गया कि वे उनकी न्यायालय में लंबित राजीनामा योग्य प्रकरणों को शीघ्र चिन्हित कर पक्षकारों को नोटिस जारी करें। उन्होंने कहा कि नेशनल लोक अदालत में प्रकरणों के निराकरण से दोनों पक्षों के बीच कटुता समाप्त होती है एवं दोनों पक्षों की जीत होती है। अधिवक्ताओं को अपने पक्षकारों को प्रकरण लोक अदालत के माध्यम से निराकरण कराये जाने के लिए समझाईश देना चाहिए और उन्हें इसके लिए प्रेरित करना चाहिए ताकि लोक अदालत का लाभ सभी को मिल सके। प्रधान न्यायाधीश ने बैठक में जानकारी देते हुए बताया कि राजीनामा वास्तव में दो पक्षों की आपसी सहमति का विषय है और मामला वहीं समाप्त हो जाता है। लम्बे समय से चल रहे विवादों का जब समाधान के आधार पर या राजीनामे के आधार पर समापन होता है तो दोनों ही पक्षों को खुशी मिलती है।

परिवहन विभाग द्वारा शैक्षणिक संस्थानों के 22 वाहनों जांच कर अनियमितता पाए जाने पर 07 वाहनों पर की चालानी कार्रवाई

चालानी कार्रवाई में 22 हजार रुपए का शमन शुल्क वसूल किया

देवास (निप्र)। कलेक्टर श्री ऋतुराज सिंह के निर्देशानुसार परिवहन विभाग द्वारा देवास जिले में संचालित होने वाली स्कूल बसों के लिए विशेष जाँच अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में देवास शहर में संचालित हो रहे शैक्षणिक संस्थानों की स्कूल बसों की जांच परिवहन विभाग के दल द्वारा की गई।

जिला परिवहन अधिकारी जया वसवा ने बताया कि मंगलवार को की गई कार्यवाही में देवास शहर के चैतन्य टेक्नो स्कूल, कौटिल्य पब्लिक स्कूल तथा मार्ग पर संचालित अन्य शैक्षणिक संस्थान के लगभग 22 स्कूल बसों की माननीय सुप्रीम कोर्ट की गाइड लाइन के अनुरूप मापदण्ड पूर्ण होने संबंधी जांच की गई। इस दौरान 7 वाहनों में अनियमितता पाई जाने पर चालानी कार्यवाही की जाकर 22 हजार रुपए का शमन शुल्क वसूल किया गया। उन्होंने बताया कि स्कूल बस संचालकों को निर्देशित किया गया कि अपनी-अपनी वाहनों को माननीय सुप्रीम कोर्ट की गाइड लाइन के अनुसार निर्धारित मापदण्ड पूर्ण करने पर तथा निर्धारित दस्तावेज पूर्ण होने पर ही मार्ग पर संचालित करें। परिवहन विभाग द्वारा मार्ग पर वाहनों की चैकिंग कार्यवाही लगातार जारी रहेगी।

धार जिले में 114 नि:शुल्क नेत्र परीक्षण शिविरों का आयोजन

धार (निप्र)। कलेक्टर प्रियंक मिश्रा के मार्गदर्शन में जिला अंधत्व निवारण समिति धार द्वारा जिले में 01 फरवरी से 28 फरवरी 2025 तक विशेष नि:शुल्क नेत्र परीक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इस पहल का उद्देश्य ग्रामीण एवं पहुँचविहीन क्षेत्रों में निर्धन और जरूरतमंद लोगों को उच्च गुणवत्ता वाली नेत्र चिकित्सा सेवाएँ नि:शुल्क उपलब्ध कराना है।

जिले में कुल 114 नेत्र परीक्षण शिविरों का आयोजन किया जाना है, जिनमें से 16 फरवरी 2025 तक 78 शिविर आयोजित किए जा चुके हैं। इन शिविरों में 1440 मरीजों को मोतियाबिंद ऑपरेशन के लिए चयनित कर अनुबंधित अस्पतालों में भेजा गया है। अब तक 14528 मरीजों के मोतियाबिंद ऑपरेशन सफल इस अभियान के तहत 01 अप्रैल 2024 से 16 फरवरी 2025 तक 19850 मरीजों के लक्ष्य के विरुद्ध अब तक 14528 मोतियाबिंद ऑपरेशन सफलतापूर्वक किए जा चुके हैं। यह ऑपरेशन चोइथराम अस्पताल इंदौर, रेटिना स्पेशिलिटी अस्पताल इंदौर, अरबिंदो अस्पताल इंदौर, शंकर नेत्रालय इंदौर, जीवनज्योति अस्पताल मेघनगर, दृष्टि नेत्रालय दाहोद और जिला चिकित्सालय धार में विशेषज्ञ नेत्र सर्जनों द्वारा किए जा रहे हैं।

इसके अलावा, जिला चिकित्सालय धार में प्रतिदिन डॉ. सौरभ बोराशी एवं डॉ. गरिमा वैष्णव द्वारा मोतियाबिंद ऑपरेशन किए जा रहे हैं। नि:शुल्क सुविधाएँ शिविरों में आए मरीजों को मुफ्त नेत्र परीक्षण, मोतियाबिंद ऑपरेशन, एम्बुलेंस/बस सेवा, ठहरने की सुविधा, भोजन, चश्मे और दवाइयाँ नि:शुल्क उपलब्ध कराई जा रही हैं।

कलेक्टर प्रियंक मिश्रा के निर्देश कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने निर्देश दिए हैं कि अधिक से अधिक मोतियाबिंद मरीजों को इन शिविरों तक पहुँचाया जाए ताकि वे इस नि:शुल्क सेवा का लाभ उठा सकें। उन्होंने जनता से अपील की है कि जो भी मोतियाबिंद की समस्या से जूझ रहे हैं, वे नजदीकी शिविर में जाकर इस सुविधा का लाभ लें।

वनमाली कथा समय व विष्णु खरे सम्मान विशेष

कला, साहित्य एवं संस्कृति के लिए समर्पित वनमाली सृजनपीठ द्वारा तीन दिनी साहित्य संस्कृति का समागम भोपाल में आयोजित किया जा रहा है। इसके अंतर्गत वनमाली कथा समय एवं राष्ट्रीय विष्णु खरे कविता सम्मान समारोह का आयोजन रबीन्द्रनाथ टैगोर विवि तथा स्कोप ग्लोबल स्किल्स विवि में किया जा रहा है। संस्कृतिकर्मियों के इन अनूठे आयोजन पर इस विशेष आयोजन का पहला पन्ना–

साहित्यकार, शिक्षाविद् वनमालीजी के जीवन की चित्रमय झांकी, सृजन से सम्मान तक

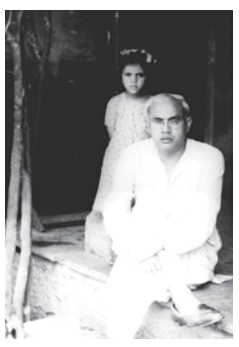

वनमाली और मैं साथ-साथ

संतोष चौबे

क्या कहानी के पीछे भी एक कहानी होती है जो उसके साथ-साथ लगातार चलती रहती है और उसे अर्थवान बनाती है? क्या कहानियों की पृष्ठभूमि और आधार उसके कथ्य तथा रूप का निर्धारण करते हैं या वह इनसे स्वतंत्र अपना रूपाकार ग्रहण करती है? और आज के समय में, जब यथार्थ की गति और तापक्रम अत्यधिक तेजी से बदल रहे हैं, तब उनसे कहानी की संगति कैसे बिठाई जा सकती है? आखिरकार 'कहानी की आत्मा' कहाँ निवास करती है?

तो क्या हम समाज की गति और तापक्रम की पहचान को कहानी की आत्मा तक पहुँचने का रास्ता मानें? पर ये दोनों तो दृश्य हैं, आत्मा की तरह अदृश्य नहीं। अचानक मुझे लगा कि मैं अभी भी 'कहानी' या कथा लेखक की दृष्टि से ही सोच रहा हूँ, पाठक की दृष्टि से नहीं और अचानक मुझे समझ में आया कि अपने तमाम सदुणों के बावजूद महत्वपूर्ण ये है कि कहानी ने पाठक के मन-मस्तिष्क पर क्या प्रभाव डाला। वह प्रभाव दिखता नहीं है, पर होता

है। पाठक प्रसन्न हो सकता है, यथार्थ की नयी पहचान से आलोकित हो सकता है, अचानक मौन और स्तब्ध होकर खुद के भीतर जा सकता है और वहाँ से हल्का होकर बाहर आ सकता है। कहानी पाठक को निराशा, अवसाद तथा रुग्णता में डुबा सकती है। तय हुआ कि कहानी की आत्मा उस प्रभाव में रहती है जो वह पाठक के मन में पैदा करती है।

इस कसौटी को लेकर मैं अपने पिता वनमाली जी की कहानियों तक पहुँचा। मैंने देखा कि उनकी कहानियों से गुजरते हुए मैं उनके और निकट पहुँचता हूँ। उनके मन को पहचान पाता हूँ। उनकी भाषा, उनके विचार और उनके समय को पहचान पाता हूँ। अब उनकी कहानियों में कभी अम्मा, कभी बुआ, कभी बहनें, कभी पंडित जी और कभी शीतल भाई झलक जाते हैं। अचानक मैं देखता हूँ कि मेरे पहले उपन्यास में मेरा अपना बचपन, खंडवा और दादा कैसे चुपचाप प्रवेश कर गये थे, कि मेरी कहानी 'बीच प्रेम में गाँधी' की भाव-भूमि पचास साल की दूरी के बाद भी उनकी 'पति' कहानी के बहुत निकट है, कि 'रामकुमार के जीवन का एक दिन' का क्राफ्ट एक हद तक 'घर' के क्राफ्ट के आसपास पहुँचता है, और मैं मन ही मन मुस्कराता हूँ।

अचानक मैं पाता हूँ कि कहानी का रास्ता कोई सपाट रास्ता नहीं, जैसा कि उन्होंने कहा था। वह स्मृति से स्मृति में, मन से मन में और समय से समय में प्रवेश कर जाने वाला रास्ता है। कभी टेढ़ा-मेढ़ा, कभी घुमावदार, कभी पहाड़ों और कन्दराओं से गुजरता और कभी मैदान में सरपट भागता। मैं देखता हूँ कि मेरी कहानी का रास्ता उनकी कहानियों से होकर जाता है और उस पर चलते हुए वे अक्सर मेरे साथ होते हैं। शायद, मेरे भीतर !

विष्णु खरे सम्मान समारोह में आमंत्रित साहित्यकार

ए अरविंदाक्षन

अखिलेश

बलराम गुमास्ता

जितेन्द्र श्रीवास्तव

लीलाधर मंडलोई

महेश वेराम

महेश दर्पण

ममता कालिया

मुकेश वर्मा

नंदकिशोर

नीलेश रघुवंशी

निरंजन श्रोत्रिय

ओमा शर्मा

पार्वती तिर्की

राधावल्लभ त्रिपाठी

संतोष चौबे

उमाकांत गुंदेचा

वज्दा खान

मित्र, शिक्षक और एक अप्रतिम कथाकार

विष्णु खरे

गुरु-शिक्षक वनमाली की स्मृतियों को सहेजता विष्णु खरे का चौथे वनमाली स्मृति कथा सम्मान वर्ष 2000 के अवसर पर दिया गया वक्तव्य।

अक्सर जब आदमी बोलने के लिए खड़ा होता है तो कहता है कि उसे इस आयोजन में आकर के बहुत प्रसन्नता हुई। यह अतिश्योक्ति नहीं है। लेकिन मैं बहुत ईमानदारी से यह कहना चाहता हूँ कि इस आयोजन और इस अवसर पर बोलने के लिये आमंत्रित किये जाने को मैं अपने जीवन का एक बहुत बड़ा अवसर मानता हूँ। और यह कि आदमी की छोटी-सी जिन्दगी में कुछ ऐसी बातें होती हैं, जो उसकी अगली जिन्दगी को तय करती हैं।

1956-57 का वह वर्ष है, जो मैं समझता हूँ कि मेरे पूरे जीवन में एक खासा महत्व रखता है। इस 1956-57 के वर्ष में दो व्यक्ति मेरे जीवन में केन्द्रीय महत्व रखते हैं। एक तो बहुत स्वाभाविक ही है कि मेरे पिताजी ही हैं। लेकिन दूसरा व्यक्ति जो मेरे जीवन पर एक अमिट छाप छोड़ता है, वो हैं जगन्नाथ प्रसाद चौबे। 1956 तक मैं पिपरिया में पढ़ रहा था गवर्मेन्ट स्कूल में। मेरे पिताजी वहाँ साइंस के लेक्चरर थे सरकारी स्कूल में। मैं उनसे नाराज होकर अमरावती भाग गया। पढ़ना छोड़ दिया था। 56 में मैं मैट्रिक हो जाता, तो मैं यहाँ उपस्थित न होता। 56 में मैं मैट्रिक में नहीं बैठा, अमरावती भाग गया पिता से लड़कर यानी दूर से लड़कर, पास से लड़ने की तो हिम्मत भी नहीं थी। फिर मैं 56 के मैट्रिकुलेशन के इम्तिहान के बाद खंडवा आया, जहाँ मेरे पिता का तबादला हुआ था साइंस के लेक्चरर के रूप में, और खंडवा के स्कूल में प्रिंसिपल थे जे. पी. चौबे। मेरे पिताजी उसी स्कूल में लेक्चरार थे और उसका बहुत महत्व है। मेरे जीवन की एक केन्द्रीय घटना है, जिसमें इन दोनों का वहाँ होना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

जे.पी. चौबे की मैं फोटो देख रहा था बाहर, तो मुझे कुछ ऐसे उनके पहलू नजर आ रहे हैं कि उसके बारे में वे बात भी नहीं करते थे। एक उनका किस्सा है देखिये, स्कूल में हमारे एक कैमरा था। बड़ा महँगा कैमरा था। उस जमाने में साढ़े सात सौ रुपये का कैमरा। अब आप कल्पना कीजिये ! चूँकि मुझे फोटोग्राफी आती थी तो एक बार मंडलोई साहब आये हमारे स्कूल में, और चौबे जी ने कहा- विष्णु ! तुमको फोटोग्राफी आती है और कोई कैमरेवाला मिल नहीं रहा है; तो तुम इनका एक फोटो खींच लोगे? मैंने कहा-साहब ! क्यों नहीं खींच लूँगा, आप रील डलवाइये। उसमें मैंने क्या किया? 4/6 का फोकस लगाया, 1/120 की स्पीड रखी, और जब मंडलोई जी आये चौबे जी खड़े हुए; और बटन ऐसे समय पर दबी जबकि चौबे जी तो हाथ नीचा कर चुके थे पर मंडलोई जी नमस्कार कर रहे थे। फिर उनने देखा, बोले- ये फोटो तुमने खींची है? ये क्या कर दिया? इस फोटो को नष्ट कर दो। ये किसी के हाथ में नहीं पड़ना चाहिए। समझे? मैंने कहा यस, सर। आप देखिये। फिर उन्होंने मुझे अपनी क्रिकेट टीम का कप्तान भी बनाया और बहुत सारी बातें हुईं।

लेकिन चौबे जी में एक बहुत ही बढ़िया सेंस ऑफ ह्यूमर था, वो उनका हास-परिहास का। यानी अगर आप उनके अधिकांश विद्यार्थियों से पूछेंगे तो विद्यार्थी कहेंगे कि बहुत स्ट्रिक्ट लगते थे। क्योंकि एक परिन्दा पर नहीं मार सकता था, लेकिन उनकी सेंस ऑफ ह्यूमर, उसको जानने का श्रेय मुझे मिलता है। क्योंकि शिक्षकों से मजाक तो करते नहीं थे, थोड़ा बहुत हास-परिहास करते रहे होंगे। मैं समझता हूँ कि मुझसे करते होंगे।

तो मेरे पूरे व्यक्तित्व में एक बात यह कि, तुम्हें लोगों के बीच में एक संतुलन बनाकर चलना है, तो मैंने सबसे पहले अपने पिता और चौबे जी वाली घटना चुनी, क्योंकि मुझे जानना है कि पिता कहाँ हैं और शिक्षक कहाँ हैं। मुझे जानना है कि क्या सही है, कितना सही है और क्या गलत है। मुझे जानना है कि लिखना कैसे होता है। उसके लिए क्या किया जाता है। मैंने यह भी जाना कि लिखने के बारे में चर्चा करना कितना बेकार है। आप लिखते हैं, लिखते रहिये। जे.पी. चौबे ने कभी मुझसे नहीं कहा कि इस कहानी के बारे में तुम क्या सोचते हो? यह बतलाओ। कभी नहीं पूछा। और वह अंतिम बात, जो मैं व्यक्तिगत रूप से कहकर समाप्त करूंगा। अभी तक मैंने सिर्फ व्यक्तिगत पहलू उनका लिया है। ध्यान रखिये। मुझे अभी बहुत बोलना है।

यह कि मैं पास हो गया 57 में और मैं कॉलेज चला गया खंडवा में और एक दिन जब बहुत अतीव मोह की वजह से नास्टेलेजिया की वजह से जब मैं अपने स्कूल आया तो चुपचाप घूमता रहा स्कूल में, क्लासेज में और फिर मैं अपने स्कूल के हॉल में पहुँचा। बहुत बड़ा हॉल था वह। अब भी बहुत बड़ा है। तो वहाँ ऑनर्स बोर्ड लगे हुए रहते थे पहले। ऑनर्स बोर्ड में क्या होता है? कि विद्यार्थियों की परीक्षाएँ होती हैं, तो मैं गया देखने और देखा कि 1957 में क्या एन्ट्री है। उसमें एन्ट्री थी 'शाला का सबसे अच्छा विद्यार्थी विष्णुकान्त खरे'। मैंने उसको दस बार पढ़ा; क्योंकि जे.पी. चौबे ने मुझे कभी नहीं बतलाया कि मैं तुम्हें इस स्कूल का सर्वश्रेष्ठ छात्र मानता हूँ और तुम्हारा नाम मैं ऑनर्स बोर्ड पर लिखवाऊँगा। कभी नहीं कहा। उन्होंने कभी बतलाया ही नहीं। और आप यकीन मानिये कि अब वो ऑनर्स बोर्ड नहीं है, लेकिन मैं उस ऑनर्स बोर्ड की तलाश में हूँ। दो साल पहले जब मैं गया, मैंने तफ्तीश की तो मालूम पड़ा कि ऑनर्स बोर्ड जो हैं, वो पीछे जिमनेजियम में रखवा दिये गये हैं और अपनी अगली खंडवा यात्रा में मैं निस्संदेह उसको निकलवाकर देखूँगा यदि बचा हुआ है तो।

यहाँ मैं थोड़ा भावुक हो सकता हूँ, लेकिन मैं बहुत कोशिश करता हूँ कि मैं न होऊँ। क्यों? क्योंकि मुझे उसका बहुत अफसोस है कि जब वे यहाँ थे मुझे नहीं मालूम था। मुझे पता नहीं था कि वे यहाँ हैं। मैंने इतने कमबख्तों से पूछा कि भई ! जे.पी. चौबे कहाँ हैं? एक ने मुझसे इतना बहाना किया, झूठ तक बोला था जब वो जीवित थे वो गुजर गये। जब मैं उनकी डेट ऑफ बर्थ पढ़ता हूँ तो मैं अपने आपको इतना कोसता हूँ, मैं अपने पर लानत भेजता हूँ ओ राम ! कि वो इस शहर में जीवित थे और मैं उस दौरान कई बार आया। मैं यह बात नहीं कर पा रहा था और उसका मैं कसूरवार हूँ। क्योंकि मैं बहुत खोज के चीजें निकाल लेता हूँ। लेकिन वो मरे हुए कंजरों वाला काम किसी ने मेरे साथ किया कि मैं उनको तलाश नहीं पाया और अन्तिम समय में मैं उनके चरण नहीं छू पाया था।

वनमाली एक मुकम्मल व्यंग्यकार भी थे

डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी

बनमाली का नाम तथा स्थान तो हिन्दी कहानी के इतिहास में सुरक्षित है ही। बल्कि अभी तक इसी रूप में मैं उनको जानता, समझता तथा आदर करता रहा हैं। कम लिखा है उन्होंने (कुल पच्चीस कहानियाँ हैं वनमाली समग्र में।) कम लिखा क्योंकि जीवनपर्यन्त वे कुछ और ही ज़्यादा महत्वपूर्ण रचते रहे। उनके लेखक को हमेशा ही उनके अध्यापक व्यक्तित्व ने समय ही नहीं लेने दिया। वे एक 'फुल टाइम' गुरु रहे जिनका अध्यापन स्कूल बंद होने के बाद भी जारी रहता था। एक प्रखर अध्यापक के तौर पर उनका जीवन हजारों छात्रों का जीवन रखने में ही होम हो गया। पर जितनी कहानियाँ भी उन्होंने लिखीं, उनसे उनका एक मुकम्मिल कहानीकार का रूप तो बनता ही है।

अब यदि मैं इसी जगह यह भी लिखूँ कि वे एक मुकम्मल व्यंग्यकार भी थे, तो ?

कठिन-सा है यह बयान परन्तु यह ऐतिहासिक कारणों से भी ज़रूरी है कि ऐसा भी कहा जाए। मैंने स्वयं भी, कभी, वनमाली जी का नाम हिन्दी व्यंग्य के पूर्वजों में न तो कभी कहीं उल्लेखित होते देखा है, न ही स्वयं मैंने ही कभी ऐसा किया।

वैसे उनकी कहानियाँ पढ़ते समय अवश्य यह बात मुझे बार-बार महसूस होती रही है कि वनमाली जी में कहीं न कहीं एक सजग तथा कुशल व्यंग्यकार भी है जो कहानी की भाषा तथा योजना की आड़ से झलक झलक जाता है। वनमाली समय के जिस कालखंड में सक्रिय रहे उस समय हिन्दी भाषा में व्यंग्यकार नामक प्रजाति का विधिवत जन्म नहीं हुआ था, और 'व्यंग्य' को 'लगभग' विधागत दर्जा मिलने की बात तो तब कोई सोच भी नहीं सकता था। तो जग के लिए हिन्दी भाषा में व्याप्त ऐसे बंजर माहौल में तब इतनी बढ़िती व्यांव के लिखने वाले शख्स से यह प्रत्याशित भी नहीं था कि वह पूरी-पूरी कहा रचनाएँ भी लिखे, या लिख सकता है। परन्तु वनमाली समग्र पढ़ते हुए अभी जब मैं उनकी छः व्यंग्य रचनाएँ पढ़ रहा था तो एक अप्रत्याशित सुखर अध्चर्य में पड़ गया। वाह, क्या बात है! संपूर्ण व्यंग्य रचनाएँ हैं ये। कुल जमा उन्नीस पेजों में छपी इन छः व्यंग्य रचनाओं में व्यंग्य के वे समस्त उपादान मौजूद हैं, जिनको हम आज के अनेकों स्वनामधन्य व्यंग्यकारों की व्यंग्य रचनाओं में भी देखने को तरस जाते हैं। बेहद सधे तथा नियंत्रित अंदाज में लिखी वनमाली जी की ये व्यंग्य रचनाएँ इस बात के प्रमाण हैं कि वनमाली जी के पास व्यंग्य का पूरा सौंदर्यशास्त्र ही मौजूद था। उन्होंने एक सम्पूर्ण व्यंग्यकार के विश्वास तथा कुशलता से इन व्यंग्य रचनाओं को लिखा है।

बहुत-सी अनकही बातों में बहुत-सा कह डालना यूँ तो साहित्य तथा कला की हर विधा का गुण है परन्तु व्यंग्य तथा कविता पर तो यह बात बेतरह लागू होती है। वनमाली के ये व्यंग्य, (मात्र छः व्यंग्य ही) विषय, भाषा, शैली तथा कलापक्ष के लिहाज से आपस में इतने भिन्न हैं मानो वनमाली जी ने मात्र छः रचनाओं में ही बहुरंगी व्यंग्य संसार रच डालने की ठानी हो। वे इसमें किसी हद तक सफल भी हुए हैं।

वनमाली की इन व्यंग्य रचनाओं में व्यंग्य के सभी रूप दिखते हैं। इनमें व्यंग्य कथाएँ हैं (दो चेहरे, डालडा दोनों व्यंग्य के लहजे में लिखी गई कहानियाँ होते हुए भी पूर्ण व्यंग्य ही हैं), फंतासी है (जनता की सरकार-में तिनके और मोची का संवाद फंतासी का सुंदर प्रयोग है और पूरी कथा का व्यंग्य तथ्य इसी फंतासी से उभरता है), लघुकथाएँ भी हैं (तीनों लघुकथाएँ नितांत अलग-अलग रंग की हैं, यूँ इस रचना का नाम वनमाली ने एक रंग दिया है) और व्यंग्य निबंध तो हैं ही (नमस्ते तथा नई तालीम)। इन व्यंग्य रचनाओं में प्रशासन में व्याप्त होता भ्रष्टाचार (जो शिष्टाचार का महीन रूप लेकर स्वतंत्र्योत्तर भारत के शैशव काल में तब भारतीय प्रशासन में जगह बना ही रहा था) (दो चेहरे, डालडा, खरबूजे) और राजनीति (एक रंग की पहली दो रचनाएँ) से लगाकर शिक्षा जगत में अंतर्विरोध (नई तालीम), गरीब की मजबूरियाँ (जनता की सरकार) तथा समाज में व्याप्त तिकड़मी जीवन-शैली (नमस्ते) तक जीवन की हर विसंगति पर लेखक की पैनी नज़र है। इन व्यंग्य रचनाओं में लेखक अलग से स्वयं कोई बयान दर्ज नहीं करता (जैसाकि बहुत से व्यंग्यकार आज भी करते हैं और जो व्यंग्य विधा की कमजोरी बन चुका है) परन्तु उनकी व्यंग्य रखना में ही बहुत से बयान अंतर्निहित रहते हैं।

उनकी व्यंग्य रचनाओं में, परसाई जी की भाँति आप्त वाक्यों की छटा बिखरी रहती है। यूँ उनकी यह विशेषता उनकी कहानियों में भी यत्र-तत्र दिखती है जो उनके अंदर छिपे व्यंग्यकार की झलक ही है जिसकी चर्चा मैंने शुरुआत में की परन्तु व्यंग्य रचनाओं में तो ये आप्त वाक्य पूरी शिद्दत से मौजूद हैं जो रचना के सौंदर्य तथा व्यंग्य की मार को द्विगुणित कर देते हैं। कुछ आप्त वाक्यों का उल्लेख करने का लोभ सँवरण नहीं कर पा रहा। 'आदमी आज डालडा हो गया है अर्थात् मूँगफली का जमा हुआ घी, जो घी नहीं है लेकिन असली घी के नाम से विज्ञापित होता है' (डालडा), 'यदि तेरी स्वराज की यह कल्पना है तो वह सिर्फ कठपुतलियों के नाच के सिवाय और कुछ नहीं' (स्वराज), 'स्वराज हो गया तो क्या, सामान ढोने के लिए और मेहनत-मशक्कत के लिए गधों की बरूरत तो रहेगी ही। तुझे दाने-पानी की फिकर छोड़नी होगी। मात्र शुद्ध गधा रहना होगा।' (स्वराज), 'स्वराज तो मात्र एक टकसाल है और हम सब उसके भीतर चलतू नोट और चाँदी के रुपये हैं जिसका असल मूल्य कुछ भी नहीं है।' (स्वराज), 'जहाँ सत्य हारता है, वहाँ से कला शुरू होती है (स्वराज),' नौकरी क्या हुई, रामलीला की नौकरी हो गई। (रामलीला मैनेजर), 'सरकारी साहब लोग आदमी नहीं होते। वे फरिश्ते होते हैं जो काम नहीं करते'। (रामलीला मैनेजर)।

हिन्दी शिक्षण पर विमर्श

जवाहर कर्नावट

दुनिया भर में बसे हुए भारतवंशियों का जुड़ाव अपनी भाषा और संस्कृति से होने के कारण इन देशों में 'लिटिल इंडिया' के दर्शन हो जाते हैं। इन प्रवासी भारतीयों की एक प्रमुख चुनौती नई पीढ़ी को अपनी भाषा और संस्कारों से परिचित कराते हुए प्रवासी देश के साथ तादात्य बनाए रखना भी है। भारतीयता को बनाए रखने के प्रयासों में अपनी भाषा को विदेशों की परती पर फैलाने का कार्य भी इन प्रवासी भारतीयों ने बखूबी किया है। भारत की प्राचीन संस्कृति, परंपराओं और ऐतिहासिक ग्रंथों को समझने के लिए भी अनेक विदेशी विद्वानों ने भी हिंदी में अध्ययन और शोध के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। इस प्रकार विश्व के विभिन्न देशों में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा तक पहुँच गई है। अनेक देशों में सामुदायिक गतिविधियों के रूप में भी हिंदी प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। विश्व के प्रमुख देशों के भ्रमण के दौरान मुझे हिंदी भाषा के शिक्षण तथा साहित्य संबंधी अध्ययन एवं शोध की समृद्ध परंपरा देखने को मिली। गिरमिटिया देशों मॉरिशस, फिजी, गयाना त्रिनिदाद टोबेगो, दक्षिण अफ्रीका के अलावा यूरोप अमेरिका, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप में भी हिंदी शिक्षण की जड़ें गहरी हो चुकी हैं।

आज प्रमुख आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक देश के भाषिक और सांस्कृतिक परिवेश के अनुरूप हिंदी शिक्षण के समूचे ढांचे को सुदृढ़ किया जाए। अन्य विदेशी भाषाओं की तुलना में हिंदी भाषा में विद्यार्थियों की संख्या लगातार कम हो रही है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री का अभाव वर्षों से बना हुआ है। दूसरी ओर भाषा से जुड़ी तकनीकी सुविधाओं में क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहा है। भाषा प्रयोग के अवसर और क्षेत्रों में भी बदलाव हो रहा है। इस स्थिति में इन सभी देशों की दृष्टि भारत की ओर है। उनकी अपेक्षा है कि उन्हें हिंदी भाषा-शिक्षण को अधुनातन बनाने के लिए अधिक से अधिक संसाधन भारत से मिल सकें। इसमें भारत सरकार के विदेश मंत्रालय तथा शिक्षा मंत्रालय से सम्बद्ध संस्थाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारे दूतावासों का सकारात्मक रवैया भी आवश्यक है। इन देशों के हिंदी प्राध्यापकों का यह भी स्पष्ट मत है कि भारत के सामजिक एवं शैक्षिक जीवन में हिंदी की उपेक्षा का प्रतिकूल प्रभाव विदेशों में हिंदी शिक्षण पर होता ही है। इसलिए यह भी आवश्यक है कि भारत में सभी स्तरों पर हिंदी को प्रतिष्ठित करने के गंभीर प्रयास हों।

विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ रही है और देश की प्रतिनिधि भाषा माने जाने के कारण हिंदी की भी। प्रवासी भारतीयों की सामाजिक और सांस्कृतिक सक्रियता तथा संबंधित देश की शिक्षण संस्थाओं में हिंदी के पठन-पाठन की शताब्दी से अधिक पुरानी शिक्षण परम्परा के कारण हिंदी विश्व के अधिकांश देशों में विद्यमान है और यह तो निर्विवाद है कि भारत के इतिहास, संस्कृति एवं परंपराओं के समुचित अध्ययन एवं अध्यापन हेतु हिंदी तथा संस्कृत भाषा से परिचय अपरिहार्य है। इन सभी तथ्यों के दृष्टिगत यह अत्यंत आवश्यक है कि वैश्विक स्तर पर हिंदी को समृद्ध करने हेतु योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया जाए।

वनमाली सृजन पीठ भोपाल द्वारा दुष्यंत संग्रहालय में रचना पाठ का आयोजन

विश्व हिंदी दिवस पर पुरस्कृत पुस्तकों पर चर्चा

वनमाली सृजन पीठ भोपाल द्वारा दुष्यंत संग्रहालय में रचना पाठ का आयोजन

'कवि सप्तक' में पाठ करते हुए कवि

वनमाली सृजन पीठ द्वारा कहानी पाठ का आयोजन